श्री भुवनेश्वरी साधना

विनियोग : अस्य श्रीभुवनेश्वरीमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो हकारो बीजं ईकार: शक्तीरेफ: कीलकं श्रीभुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादि न्यास : शक्तिऋषये नम: शिरसि १। गायत्रीच्छंदसे नम: मुखे २। भुवनेश्वर्यै देवतायै नम: हृदि ३। हं बीजाय नम: गुह्ये ४। ईं शक्तये नम: पादयो ५। रं कीलकाय नम: नाभौ ६। विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यास:।

करन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नम: १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नम: ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नम: ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम: ५। ॐ ह्र: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम: ६। इति करन्यास:।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नम: १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वशट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौ नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्र: अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादिषडगन्यास:।

ध्यान :

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दु किरीटान्तुङ्गकुचात्रयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं व्वरदाङ्कुशपाशा मीतिकराम्प्रभजे भुवनेशीम्।

मंत्र : ह्रीं
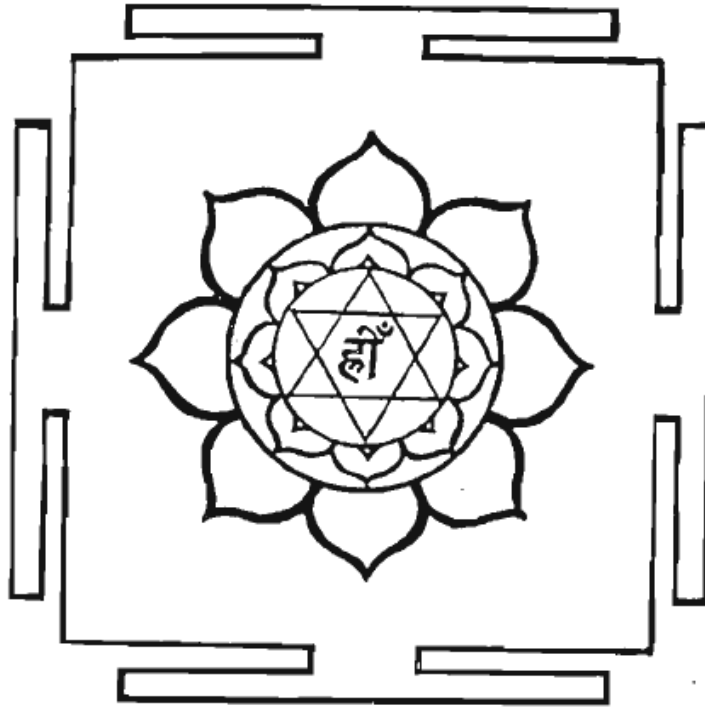
भुवनेश्वरी यन्त्र

अटूट धन प्राप्ति का बेजोड़

मंत्र

भुवनेश्वरी-साधना

इस लेख को प्रारम्भ करते समय सर्वप्रथम मैं अपना परिचय देना आवश्यक समझता हूं। मैं एक प्राध्यापक हूं और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अध्ययन को ही अपने जीवन यापन का साधन बनाया था। अध्यापन मेरा व्यवसाय नहीं था और जीवन के उदात्त मूल्यों को ध्यान में रखते हुए एवं अपनी प्रकृति को समझते हुये ही इस क्षेत्र में

भगवती भुवनेश्वरी

किया था। मेरी इच्छा थी कि मैं
स्वयं को निरंतर ज्ञान से ओत
रख सकूंगा वहीं आने वाली पीढ़ि
कुछ प्रदान कर उस अनिर्वचनीय
का अनुभव कर सकूंगा जो किस
कुछ प्रदान करने में होती है।
के प्रारम्भिक वर्ष तो सामान्यतः सु
से व्यतीत हुये क्योंकि मेरी जीवन
साधारण थी और पारिवारिक द
का बोझ नहीं के बराबर ही था
मैंने दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किय
भी आदर्शों की उच्च भावभूमि में
के कारण उन बातों को उपेक्षा ही
रहा जो मेरी पत्नी नित्य प्रति के
को लेकर करती थी। धीरे-धीरे प
का विस्तार हुआ और जीवन की स
कठिन होने लगीं। इन्हें लेकर उ
उदासीन नहीं रह सकता था। मैंने
प्रयास करके देखे किंतु आय का
स्त्रोत नहीं मिला। इन्हीं सब परिस्थि
में मैं चाहते हुये भी अपने छात्र
ध्यान नहीं दे पा रहा था जब
जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उन्हें
पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भाँति भाँ
ज्ञान देकर उनका जीवन परिपूर्ण
ही अहोभाग्य मानता था। इसका
था वह आर्थिक कठिनाइयां जिनके
मेरा मन हर समय भटकता ही

था। पत्नी का उदास बुझा हुआ चेहरा, जो कि यद्यपि मुझसे कुछ नहीं कहती थी किन्तु उसकी व्यथा तो चेहरे से ही परिलक्षित होती थी। मेरे दो पुत्र एवं एक पुत्री जो कि इस घोर भौतिक युग में अपने सहपाठियों के साथ ताल मेल न बैठा पाने के कारण एक प्रकार के दबे व्यक्तित्व को लेकर बड़े हो रहे थे, और अध्मापन का वर्षों का अनुभव मुझे उनकी मन: स्थिति के बारे में बिना उनके कुछ कहे सब कुछ स्पष्ट कर देता था। मैं अत्यन्त उदास हो जाता था, यदि वे इसी प्रकार जीवन बीते रहे तो यह कब उन संस्कारों को प्रस्फुटित कर सकेंगे जो मैंने उनके बचपन में उनमें रोपे थे। यूं कहा जाय कि मानों स्वस्थ जाति के पौधे बिना ... के जीवन की धूप में कुम्हला गये थे, और मेरी व्यथा उन सामान्य गृहस्थों से कहीं अधिक थी जो कि अपने पुत्रों को खाने पीने व पहनने की वस्तुएं प्रदान करने के बाद अपने कर्तव्यों की इतिश्री ही मान लेता है।

मैं बिना कुछ सोचे सीधा जोधपुर पूज्य गुरुदेव के चरणों में जा पहुंचा और उनसे अपनी दरिद्रता के बारे में निवेदन किया। काफी दिनों की इन्तजार और परीक्षा के बाद मुझे भुवनेश्वरी साधना करने की आज्ञा प्रदान की।

मैंने पूज्य गुरुदेव के बताए अनुसार भुवनेश्वरी साधना प्रारम्भ की जिसमें मुझे मूल मंत्र "ह्रीं" के एक लाख जप करने थे। और ये जप प्रतिदिन एक विशेष संख्या में करने थे, मैं सामान्य पूजा पाठ तो प्रतिदिन करता था, किन्तु प्रतिदिन एक लम्बी अवधि तक बैठकर जप करना मुझे अटपटा लग रहा था। फिर मैंने एक दिन जो कि सोमवार था, प्रातः अपने पूजा कक्ष को साफ धोकर सफेद ऊनी आसन बिछा कर और सामने लकड़ी की छोटी सी चौकी पर भी सफेद ही वस्त्र बिछाकर उस भुवनेश्वरी देवी का यंत्र एवं चित्र स्थापित कर स्वयं भी सफेद धोती पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर आसन ग्रहण किया। घी की अखण्ड ज्योति भी स्थापित कर दी। मेरा लक्ष्य था कि प्रतिदिन सौ माला जप कर के मैं दस दिनों में लक्ष्य पूर्ण कर लूंगा। मैंने यह जप पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त स्फटिक माला से करना प्रारम्भ किया। प्रथम तीन दिन तो जप करता रहा और कोई उल्लेखनीय बात नहीं रही सिवाय इसके कि मैं जब जप करके उठता था तो मेरा मन विशेष प्रफुल्लित रहता था।

पूज्य गुरुदेव शिष्यों को साधना सिखाते हुए

चौथे दिन कुछ दिव्यता सी अनुभव हुयी जिसे मैं अपनी अज्ञानता वश पूर्णरूपेण समझ न सका। बस ऐसा लगा मानों कोई दिव्य प्रकाश यहां क्षण भर रहा हो और विलीन हो गया हो। पांचवे दिन इसी अनुभव को और अधिक देर तक अनुभव किया तथा छठें दिन तीव्र सुगन्ध स्पष्ट रूप से अनुभव की। मेरा अर्न्तमन अत्यधिक प्रफुल्लित था और लग रहा था मानों यह सब साधना में सफलता के आयाम हैं। इसके पश्चात क्रमश: सातवें, आठवें, नवें व दसवें दिन भी एक श्रेष्ठ मन: स्थिति में ही व्यतीत हुए। यद्यपि तुरंत मुझे कोई आर्थिक समाधान नहीं मिला था किन्तु मानसिक स्थिति में जो सुधार हुआ था वह मेरे लिए उत्साहप्रद था। पूज्य गुरुदेव ने कहा था कि संभव है कि पूर्व जन्म के किन्हीं दोषों के कारण पहली बार में सफलता न मिले तो हतोत्साहित न होना एवं इसी साधना को पुन: करना। मेरा मन इतना आह्लादित हो चुका था कि मैं पुन: साधना में बिना किसी संकोच या ढील हवाले के बैठ गया। दूसरी बार साधना प्रारम्भ करते ही पहले दिन का मंत्र जप पूरा करके उठा ही था कि मेरे एक दूर के रिश्तेदार जो कि एक बीमा कंपनी में उच्च पदस्थ अधिकारी है आये और सामान्य बातचीत के बाद कहने लगे कि उनकी इच्छा है कि वह मेरे सबसे बड़े पुत्र को अपने साथ रखकर काम सिखाएं। उन्होंने बात को स्पष्ट करते हुए बताया कि वास्तव में कार्य तो उन्हीं को करना है किन्तु वे उच्च पद पर होने के कारण ऐसा करने में असमर्थ है और किसी विश्वसनीय व्यक्ति को ही साथ रखना चाहते है। वे अपनी बात कह रहे थे और मैं मन ही मन मुस्करा रहा था। पूज्य गुरुदेव

को कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा था। मैंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी।

मैं इस सफलता से उत्साहित होकर और अधिक प्रगाढ़ता से साधना में संलग्न हो गया। मेरे सामने जो आर्थिक समस्या विकराल रूप धारण किए खड़ी थी उसकी तीक्ष्णता में कुछ तो कमी आयी। मैं दूसरे दिन की साधना करने के पश्चात उसका जप समर्पण पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में करने के पश्चात आंखे बन्द करके स्वानन्द में चुपचाप लीन बैठा था तो ऐसा लगा मानों कोई कान में कह रहा हो 'तू अपनी कोचिंग क्लास क्यों नहीं खोल लेता'' मैंने हड़बड़ाकर आंखें खोलीं किन्तु सामने कोई नहीं था मैं इस अवस्था में भी नहीं था कि समझ सकूं कि यह स्वर स्त्री स्वर था कि पुरुष स्वर। किन्तु मेरे मन में एक विचार श्रृंखला सी चल पड़ी। सचमुच इस बात में महत्व था, क्योंकि मेरा छोटा पुत्र एम.ए करने के बाद और वह भी अच्छे अंको के साथ, एक साधारण से प्राईमरी स्कूल में अध्यापन का कार्य नहीं पा सका था। मैंने उसी क्षण साधना कक्ष से निकल कर उसे बुलाया एवं उससे यह बात कही। वह अत्यन्त प्रसन्नता से बोला कि विचार उसका भी यही था किन्तु वह मेरी अप्रसन्नता के भय से नहीं कह पा रहा था। मैंने अपनी पत्नी से विचार विमर्श किया उसकी भी सहमति थी। प्रारम्भ में ऐसा करने में अर्थ की समस्या थी किन्तु यह समस्या भी तब सहज में हल हो उठी जब मैंने अपने बड़े पुत्र को अपना निर्णय बताया, उसने बताया बीमा व्यवसाय में जुड़े मेरे उन रिश्तेदार के परिचय अत्यन्त व्यापक हैं और नगर के श्रेष्ठ व्यवसायियों से है। क्या पता कहीं से बिना ब्याज के भी ऋण प्राप्त हो जाय, मेरा आश्चर्य से मुंह खुला रह गया कि क्या जीवन में इस सहजता से भी मार्ग मिल सकते हैं।

> ***भगवती भुवनेश्वरी साधना तो जीवन की अद्वितीय साधना है, जिसकी तुलना हो ही नहीं सकती। यह एक ऐसी साधना है जिसके कई गुप्त रहस्य हैं जो गुरुदेव के द्वारा ही ज्ञात हो सकते हैं ऐसा हो ही नहीं सकता कि भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जाय, और दरिद्रता घर में रहे . . . यह तो तीव्र, तुरन्त प्रभाव युक्त एवं अजस्र धनवर्षा से संबंधित साधना है।***

तीसरे दिन साधना करते समय मेरी आंखों के समक्ष क्षण भर के लिए कोई दिव्य नारी मूर्ति आयी जिसने विविध आभूषण धारण कर रखे थे, और जिसके शरीर से अलौकिक सुगन्ध भी आ रही थी। उसी प्रकार चौथे दिन भी वही दिव्य नारी मूर्ति सामने आयी आज उसके चेहरे पर मुस्कान स्पष्ट दिख रही थी मानो मुझे आश्वस्त कर रही हो कि मेरी साधना आराधना सही चल रही है। पांचवे दिन मेरे बड़े पुत्र ने यह सुखद समाचार दिया कि उसके प्रयत्न सफल रहे हैं और शहर के एक प्रतिष्ठित व्यवसायी सहयोग के लिए तैयार हैं। साथ ही उनके पूर्वजों का विशाल पैतृक भवन भी कालेज के रूप में निःशुल्क प्रयोग में लाया जा सकता है। मैंने उन व्यवसायी महोदय से उसी दिन जाकर बातचीत की। यह सुखद आश्चर्य था कि वे मेरी समस्त बातों से सहमत थे। उसके पश्चात मैंने शेष दिनों की साधना भी अत्यंत श्रेष्ठ व आनन्ददायक स्थिति में सम्पन्न की और आज मेरा बड़ा पुत्र बीमा कम्पनी में एक उच्चपद पर है। मेरा छोटा पुत्र मेरे अवकाश ले चुकने के बाद विद्यालय का कार्यभार कुशल रूप से संभाल चुका है और पर्याप्त धन के साथ ही साथ उसकी शहर में

एक प्रतिष्ठा है। मेरी पुत्री ने भी [illegible] प्रेरणा लेकर मां भुवनेश्वरी की [illegible] की थी और अनेक दिव्य अनुभूति[illegible] साथ उसे अपने अभीष्ट में सफलता [illegible] वह भुवनेश्वरी साधना के माध्य[illegible] चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में जा[illegible] इच्छुक थी क्योंकि पूज्य गुरुदेव ने [illegible] बातचीत के मध्य स्पष्ट किया थ[illegible] भुवनेश्वरी साधना प्रकारान्तर से स[illegible] साधना ही है मेरी पुत्री इसी बा[illegible] मुझ से सुनकर प्रेरणा पाकर एक [illegible] चिकित्सक बनने में सफल हुयी है [illegible] इस बात का पूरा श्रेय भुव[illegible] साधना को ही देती है एवं मां भ[illegible] भुवनेश्वरी की साधना उसके दैनिक [illegible] का एक अंग हो चुकी है। मैं भ[illegible] भगवती के इस स्वरूप का नित्य [illegible] चिन्तन मनन करने में अपनी वृद्ध[illegible] का अधिकांश समय व्यतीत करता [illegible] उनकी ही कृपा से मेरा भौतिक [illegible] इतना परिपूर्ण हो सका है कि मैं [illegible] का कालेज खोलकर जहां अपने वि[illegible] के अनुसार श्रेष्ठ वातावरण बना [illegible] एक तृप्ति का अनुभव कर सका [illegible] वहीं व्यक्तिगत जीवन में अनेक [illegible] आध्यात्मिक अनुभूतियों से तृप्त व [illegible] बन सका हूं। मैं हृदय से पूज्य गु[illegible] का कृतज्ञ हूं और चिरऋणी हूं।

भुवनेश्वरी

जो तीनों लोकों की सम्पदा साधक पर लुटाने को तत्पर रहती है

समस्त ब्रह्माण्ड के तेज का निचोड़ यदि देखा जाय, तो वह दस महाविद्याओं के रूप में परिगणित होता है, क्योंकि दस महाविद्या तो ब्रह्माण्ड में फैली निराकार शक्ति का साकार पुञ्ज है, साकार स्वरूप है . . .

कोई भी व्यक्ति तब तक तंत्र के क्षेत्र में श्रेष्ठ नहीं समझा जाता, जब तक कि वह कोई महाविद्या सिद्ध न कर ले और जो साधक ऐसा करने में सफल हो जाता है, वह तो सारे संसार में पूजनीय हो जाता है, उच्चकोटि के योगीजन भी उसको श्रद्धा के साथ नमन करते हैं एवं देवी-देवता भी उसकी अर्चना करते हैं।

यूं तो ये सभी दस की दस महाविद्याएं अपने आपमें बेजोड़ हैं, श्रेष्ठ हैं, उच्च स्तरीय हैं, फिर भी जो स्थान इनमें महाविद्या भुवनेश्वरी का है, वह शायद ही और किसी का हो।

भुवनेश्वरी शब्द 'भुवन' से बना है, जिसका अर्थ है 'भुवनत्रय' अर्थात् तीनों लोक, अतः भुवनेश्वरी तो तीनों लोकों की अधिष्ठात्री देवी है, उनकी नियन्ता है और इन तीनों ही लोकों में सबके द्वारा पूजनीय है . . .

यदि व्यक्ति एक ही साथ उच्च स्तरीय आध्यात्मिक उत्थान एवं पूर्ण भौतिक सफलता का आकांक्षी है, तो उसे हर हालत में भुवनेश्वरी साधना करनी ही चाहिए, क्योंकि अन्य कोई ऐसी साधना है ही नहीं, जो एक ही साथ ये दोनों स्थितियां प्रदान कर सके।

इस विषय में यह कथा प्रचलित है, कि जब सहस्त्रवीर्यार्जुन ने अपने गुरुश्रेष्ठ श्री दत्तात्रेय जी से एक ही साथ भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति का उपाय पूछा, तो दत्तात्रेय ने दो टूक स्पष्ट उत्तर दिया — "वत्स! अगर तुम वास्तव में ही इन दोनों के लिए उत्सुक हो, तो बाकी सब विधान छोड़ दो और मात्र भुवनेश्वरी की साधना करो, जिससे तुम्हें यह सब सहज ही उपलब्ध हो जायेगा। इसके अतिरिक्त दूसरा और कोई रास्ता नहीं।"

भगवान राम भी जब पुन: राजतिलक के लिए बैठे, तो वशिष्ठ ने उन्हें समझाते हुए कहा —

इह लोके हि धनिनां परोऽपि स्वजनायते।
स्वजनोऽपि दरिद्राणां नराणां दुर्जनायते।।

अर्थात् हे राम! इस जगत में दरिद्र व्यक्ति के लिए अपने लोग भी पराये हो जाते हैं, परन्तु जो सम्पन्न हैं, धनवान हैं, उनसे तो पराये लोग भी अपनों जैसा बर्ताव करते हैं।

आगे बोलते हुए उन्होंने पुन: कहा — इसलिए हे राम! धनवान, वैभवयुक्त बनो और इस कार्य हेतु महामाया भुवनेश्वरी की साधना सम्पन्न करो, क्योंकि इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं। अगर अटूट और कभी न खत्म होने वाली सम्पन्नता, वैभव एवं लक्ष्मी प्राप्त करनी है, तो बस यही एकमात्र रास्ता है।

और यह बात तो किसी से छुपी नहीं है, कि 'राम राज्य' कितना अद्वितीय, सम्पन्न एवं हर्ष युक्त रहा . . . और यह सब भुवनेश्वरी साधना से ही सम्भव हो सका।

कृष्ण जब मथुरा से प्रस्थान कर द्वारिका की ओर चले थे, तो नगर बसाने के पूर्व उन्होंने भुवनेश्वरी का आशीर्वाद प्राप्त किया था। फलस्वरूप कृष्ण इस तरह की अनुपम नगरी का निर्माण कर सके, जो कि अपने आपमें ही श्रेष्ठतम रही, अद्वितीय रही, पूर्ण सम्पन्नता युक्त रही।

यह साधना इतनी उच्चकोटि की है, कि सहज किसी को प्राप्त ही नहीं होती। ऋग्वेद में स्पष्ट लिखा है, कि इस संसार में चाह कर भी भुवनेश्वरी साधना को प्राप्त करना असम्भव है। जिस व्यक्ति के पूर्व जन्म के सुकार्यों के शुभ फल जाग्रत होते हैं, उसे ही ऐसे गुरु प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार का उच्चकोटि का ज्ञान प्रदान कर सकें।
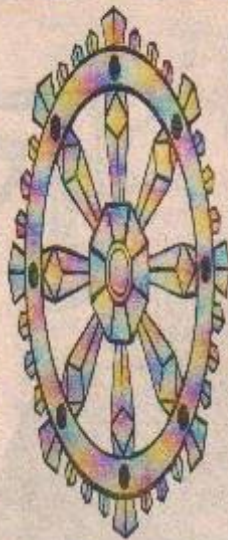
पर कभी-कभी तो ऐसा होता है, कि व्यक्ति अचानक अपने जीवन में सद्गुरु की झलक तो पा जाता है, पर वह मूढ़ उनको पहिचान नहीं पाता और अपना हाथ छुड़ा कर अलग रास्ते पर चला जाता है।

एक बार भगवान शिव और पार्वती पृथ्वी लोक पर विचरण कर रहे थे। मार्ग में उन्हें एक अत्यन्त ही सीधा-सादा सद्गृहस्थ ब्राह्मण मिला, जो दरिद्र जीवन व्यतीत कर रहा था, पर इतना होने पर भी वह शिव का उत्कट उपासक था और उनमें उसकी श्रद्धा अटूट थी।

उसे देख कर पार्वती का हृदय पिघल गया और वे भगवान शिव से बोलीं — "हे नाथ! यह कैसी लीला है आपकी, यह ब्राह्मण तो आपका उत्तम भक्त है, पर फिर भी यह इतना निर्धन, इतना गरीब! कृपा कर इसे धनवान बना दें।"

शिव बोले — "हे देवी! इस मनुष्य के भाग्य में धन-वैभव है ही नहीं।"

"यह सब कुछ मैं नहीं जानती, अगर आप चाहें, तो सब कुछ कर सकते हैं, आप कृपा कर इसे निर्धन से धनवान बना दीजिए।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा" — भगवान शिव ने एक लम्बी श्वास ले कर कहा और हीरों से भरी एक थैली उस व्यक्ति के सामने फेंक दी।

ऋग्वेद में स्पष्ट लिखा है, कि इस संसार में चाह कर भी भुवनेश्वरी साधना को प्राप्त करना असम्भव है। जिस व्यक्ति के पूर्व जन्म के सुकार्यों के शुभ फल जाग्रत होते हैं, उसे ही ऐसे गुरु प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार का उच्चकोटि का ज्ञान प्रदान कर सकें।

जो व्यक्ति इस साधना को सिद्ध कर लेता है, उसके लिए तो साक्षात् देवराज इन्द्र का सिंहासन भी तुच्छ होता है, वह धनवानों में महाधनवान, योगियों में महायोगी एवं ज्ञानियों में महाज्ञानी कहलाता है।

दैवयोग से उसी समय अचानक उस व्यक्ति के मन में यह विचार आया, कि यदि मैं किसी कारणवश अंधा हो जाऊं, तो फिर चलूंगा कैसे?

और यह सोचते ही उसने अपनी दोनों आंखें बंद कर लीं और एक अंधे की भांति चलने की कोशिश करने लगा और यों चलते-चलते ही हीरों से भरी थैली के पास से गुजर कर उसे बिना देखे ही आगे निकल गया।

ऐसा घटित होने पर शिव ने पार्वती से कहा — "मैंने तुमसे पहले ही कहा था, कि इसके भाग्य में धन है ही नहीं, जब तक भाग्य नहीं हो, तब तक हाथ में आई वस्तु भी निकल जाती है।"

यह सही भी है, जब तक व्यक्ति उत्तम भाग्य से युक्त नहीं होता, जब तक उसके समस्त पुण्य जाग्रत नहीं होते, तब तक चाहे सद्गुरु आपके पास स्वयं चल कर भी क्यों न आ जायें, आप उन्हें पहिचान नहीं सकते . . .

और जब तक जीवन में सद्गुरु की प्राप्ति नहीं होगी, तब तक भुवनेश्वरी साधना भी पूर्णता के साथ नहीं प्राप्त हो सकती।

परन्तु जो भी सौभाग्यशाली व्यक्ति इस साधना को प्राप्त कर लेता है, वह तीनों लोकों में पूजनीय, यशस्वी, धनवान, तपस्वी, स्वरूपवान, युगपुरुष बन जाता है और आने वाली कई पीढ़ियां उसके नाम को स्मरण कर गौरव अनुभव करती हैं।

जो व्यक्ति इस साधना को सिद्ध कर लेता है, उसके लिए तो साक्षात् देवराज इन्द्र का सिंहासन भी तुच्छ होता है, वह धनवानों में महाधनवान, योगियों में महायोगी एवं ज्ञानियों में महाज्ञानी कहलाता है।

ज्यादा कुछ क्या कहा जाय, स्वयं महायोगी गोरक्षनाथ ने अपने ग्रंथ 'कपालभेति' में इस साधना सम्बन्धित 12 बिन्दुओं को स्पष्ट किया है —

1. इस साधना को सिद्ध करने के उपरान्त व्यक्ति के पास स्वत: ही लक्ष्मी का अजस्र आगमन होने लगता है। उसे चिन्ता यह नहीं होती, कि वह धन कैसे कमाये, परन्तु चिन्ता इस बात की होती है, कि वह उसका व्यय किस प्रकार करे।
2. ऐसे व्यक्ति को वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है, जिसके द्वारा वह चाहे, तो तत्क्षण किसी को श्राप या वरदान दे सकता है। वह जो भी बात कहता है, निकट भविष्य में सत्य होती ही है।
3. ऐसा व्यक्ति पूर्ण सम्मोहन से युक्त, सुन्दर एवं स्वरूपवान हो जाता है और जो व्यक्ति उसे एक बार निहार लेता है, वह उससे बार-बार मिलने की इच्छा रखता है।
4. ऐसे व्यक्ति के आगे शत्रु ठीक पीपल के पत्तों की भांति कम्पायमान रहते हैं और उसके सामने समर्पण भाव में उपस्थित रहते हैं। वे चाह कर भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाते।
5. अधिकारी गण ऐसे व्यक्ति की बात टाल नहीं सकते और वे स्वत: ही उसको दूसरों से अधिक स्नेह एवं सम्मान देते हैं।
6. ऐसा व्यक्ति अपने आप ही सम्पूर्ण ज्ञान — ज्योतिष, आयुर्वेद, पारद विज्ञान, यन्त्र विधान, हस्तरेखा आदि में पारंगत हो जाता है।
7. वह खुद तो निरोग और स्वस्थ रहता ही है, दूसरों को भी आरोग्य प्रदान कर सकता है।
8. उसकी अकाल मृत्यु (एक्सीडेंट, रोग आदि) नहीं होती और वह पूर्ण स्वस्थ रहता हुआ अपनी आयु पूर्ण करता है।
9. उसका पारिवारिक जीवन भी उसके पूर्णत: अनुकूल होता है, उसकी पत्नी एवं बच्चे हर तरह से उसका कहना मानते हैं एवं उसे पूर्ण सम्मान एवं श्रद्धा भाव से देखते हैं।

श्रद्धयात्मवतां पुंसां सिद्धिर्भवति नान्यथा।
अन्येक्षां न च सिद्धिः स्यात्तस्माद् यत्नेन साधयेत्॥

श्रद्धावान व्यक्ति को ही सिद्धि मिलती है, दूसरों को नहीं, इसलिए प्रयत्न और श्रद्धापूर्वक साधना करें।

10. ऐसे साधक का आध्यात्मिक जीवन भी बड़ा उन्नत होता है और इस साधना के उपरान्त व्यक्ति की कुण्डलिनी के सभी चक्र जाग्रत होने की अवस्था में आ जाते हैं।
11. समाज में उसे पूर्ण सम्मान एवं ख्याति प्राप्त होती है और उच्चकोटि के राज्य अधिकारी, मंत्री आदि भी उसकी आज्ञा को मस्तक पर धारण कर गौरवान्वित अनुभव करते हैं।
12. भुवनेश्वरी साधना में सफलता प्राप्त करने वाला साधक जिस क्षेत्र में, जिस कार्य में भी उतर जाता है, चाहे वह कला का हो, चाहे विज्ञान का हो, चाहे अध्यात्म का हो, चाहे चिकित्सा का हो अथवा राजनीति का हो, वह उसमें उच्चता और श्रेष्ठता प्राप्त करता ही है।

ऊपर दिये गए बिन्दु सामान्य घटना नहीं हैं, क्योंकि इनमें जीवन के सम्पूर्ण बिन्दुओं और जरूरतों का समावेश है, तभी तो इस साधना को सर्वश्रेष्ठ और पूर्णत्व देने वाली साधना कहा गया है।

निश्चय ही वह व्यक्ति अत्यन्त ही दुर्भाग्यशाली होगा, जो इस प्रकार की अद्वितीय साधना के विधान को प्राप्त कर भी इसे हस्तगत न करे।

निश्चय ही कुछ लोग होंगे, जो कि इन पन्नों को पढ़ कर आगे निकल जायेंगे, क्योंकि वे नहीं समझ सकेंगे, कि वे क्या खो रहे हैं . . . उनकी स्थिति तो ठीक उसी दरिद्री ब्राह्मण की भांति है, जो हीरों से भरी थैली अपने सामने होते हुए भी उसे प्राप्त न कर सका . . .

भगवती भुवनेश्वरी की मूल साधना में ही उच्चकोटि के योगियों ने अपने अनुभवों के आधार पर कुछ परिवर्तन किये हैं, जिससे यह साधना गृहस्थ व्यक्तियों के लिए भी अत्यन्त ही अनुकूल और सरल हो गई है, परन्तु साथ ही साथ इस साधना की तीव्रता और श्रेष्ठता ज्यों की त्यों अक्षुण्ण है।

साधना विधान

- इस साधना हेतु निम्न सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है – **'भुवनेश्वरी सिद्धि महायंत्र', 'भुवनत्रय माला' एवं 'ऐश्वर्य गुटिका'।**
- यह रात्रिकालीन साधना है।
- इस साधना को किसी भी पूर्णिमा से प्रारम्भ किया जा सकता है।
- साधना काल में मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- इसमें 3 दिन तक नित्य 21 माला मंत्र जप करना आवश्यक है।
- साधक को स्नान आदि से निवृत्त हो कर, पीले रंग के वस्त्र धारण कर, इस साधना हेतु पीले आसन पर बैठना चाहिए।
- 'भुवनेश्वरी सिद्धि महायंत्र' को अपने पूजा कक्ष में बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित करें तथा यंत्र के ऊपर 'भुवनत्रय माला' को रखें।
- फिर कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प चढ़ा कर इनका पूजन करें।
- 'ऐश्वर्य गुटिका' को यंत्र की दाहिनी ओर स्थापित करें तथा उसका भी पूजन करें।
- साधना या मंत्र जप काल में घी का दीपक लगाना अनिवार्य है।
- फिर 'भुवनत्रय माला' से निम्न मंत्र का जप करें –

मंत्र

॥ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै नमः॥

Om Hreem Shreem Kleem
Bhuvneshwarvei Namah

- 3 दिन के बाद ऐश्वर्य गुटिका को धारण कर लें तथा यंत्र, माला आदि सामग्रियों को नदी, तालाब या किसी जलाशय में विसर्जित कर दें।
- किसी कुंआरी कन्या को यथाशक्ति भोजन एवं द्रव्य आदि प्रदान करें।
- इसके ग्यारह दिन बाद ऐश्वर्य गुटिका को भी विसर्जित कर दें।

यह मंत्र अपने आपमें ही अचूक एवं कलियुग में तीव्र प्रभाव दिखाने वाला है।

न्यौछावर – 275/-

उद्यदिनद्युति मिन्दु किरीटां
तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशां
भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ।।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध विश्वास युक्त है, प्रेम युक्त है, समर्पण युक्त है। शिष्य जिस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है, गुरु अपनी कृपा से हर क्षण उसे उस लक्ष्य की ओर अग्रसर करते रहते हैं।

पर इन सबके अतिरिक्त शिष्य की सामर्थ्य के अनुसार ही उसकी पात्रता व श्रेष्ठता को देखकर ही, उसे तंत्र तथा मंत्र की अनेक दुर्लभ विधाओं से साक्षात्कार करवाते हैं और शिष्य जब गुरु की कसौटी पर खरा उतरने लगता है तथा गुरु को विश्वास हो जाता है, कि यह दुर्लभ, दुर्बोध विधियों व साधनाओं को सहेज कर रख सकेगा, उसका दुरुपयोग नहीं करेगा, तो गुरु उसे अन्य छोटी-छोटी साधनाओं को क्षणमात्र में दे देते हैं, फिर उसे दस महाविद्या साधनाओं की ओर अग्रसर करते हैं।

आगम शास्त्र में व्यक्त रूप से तंत्र विद्या दस महाविद्या के रूप में प्रत्यक्ष होती है, जो भगवती पराम्बा के ही अभिन्न स्वरूप हैं। दस महाविद्या की साधना सम्पन्न करने की योग्यता से युक्त होता साधक जब अपने गुरु से क्रमशः इन साधनाओं के गूढ़ रहस्यों को प्राप्त करता है, तो यह क्रिया साधना के क्षेत्र में उच्चता के विभिन्न सोपानों पर अग्रसर होने की क्रिया होती है। गुरु इन साधनाओं द्वारा उसे अध्यात्म के क्षेत्र में ही उच्चता की ओर अग्रसर नहीं करते, अपितु भौतिक जगत के भी समस्त पदार्थों का अधिकारी बना देते हैं।

दस महाविद्या साधना क्रम में 'भुवनेश्वरी साधना' भी एक ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जो शिष्य को गुरु की अहैतु की कृपावश प्राप्त होती है तथा जिसे सम्पन्न कर वह विश्व का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व बनने की योग्यता प्राप्त करने की क्रिया में संलग्न हो जाता है।

सांदीपन ऋषि ने भी कृष्ण को जब विश्व का अद्वितीय और श्रेष्ठतम व्यक्तित्व बनाने की क्रिया आरम्भ की, तो उन्हें भुवनेश्वरी साधना भी सम्पन्न करवाई थी। भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने के बाद साधक में समस्त चर-अचर को सम्मोहित करने की क्षमता आ जाती है, उसके समक्ष समस्त प्राणियों की वाणी स्तम्भित हो जाती है तथा इस प्रकार एक

निर्बल शक्तिहीन व्यक्ति भी शक्ति सम्पन्न बन जाता है, क्योंकि भगवती भुवनेश्वरी की साधना को सिद्ध करने के पश्चात्

भगवती भुवनेश्वरी की साधना सम्पन्न करने के पश्चात् यदि साधक भगवती के बीज मंत्र 'ह्रीं' से भोजन को अभिमंत्रित कर ग्रहण करता है, तो उस अन्न का सेवन करने वाला लक्ष्मी सम्पन्न होता है।

साधक के लिए वशीकरण, सम्मोहन, सौभाग्य लाभ तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं रहता।

'भुवनेश्वरी' महाविद्याओं में चतुर्थ शक्ति के रूप में स्थित हैं। भुवनेश्वरी के बीज मंत्र 'ह्रीं' में भगवती का स्वरूप निरन्तर विद्यमान कहा गया है।

'दक्षिणामूर्ति संहिता' के अनुसार भगवती भुवनेश्वरी के बीज मंत्र में आकाश बीज 'हकार' में कैलाशादि समाहित हैं, वह्नि बीज 'रेफ्' में पृथ्वी समाहित है तथा 'ईकार' अनन्त रूप में पाताल में स्थित हो समस्त भू-मण्डल को समाहित किये हुए है। अतः तीनों लोकों (स्वर्ग, मर्त्य और पाताल) के समाहित होने के कारण ही इन्हें त्रिभुवनों की नायिका मानकर भुवनेश्वरी कहा गया है।

देवी भागवत में वर्णित देवी का शक्ति स्वरूप तथा महालक्ष्मी स्वरूप का समन्वित रूप है 'ह्रीं' बीज। भुवनेश्वरी साधना का अर्थ है – साधक समस्त प्रकार के भौतिक सम्पदाओं को प्राप्त करता हुआ साधना के उस उच्चतम सोपान को प्राप्त करे, जहां साधक कालपुरुष बन जाता है।

भगवती भुवनेश्वरी को अनेक स्वरूपों में सम्बोधित किया गया है, प्रत्येक स्वरूप साधक के लिए नवीन चिन्तन युक्त है। विश्वोत्पत्ति के पश्चात् जब वह शक्ति त्रिभुवन का सञ्चालन करती है, तो उसे 'भुवनेश्वरी' के रूप में सम्बोधित किया गया।

अमृत से विश्व का पोषण करने के लिए भगवती ने अपने किरिट पर चन्द्रमा धारण किया। भगवती के इस स्वरूप का 'इन्दु किरीटी' के रूप में चिन्तन किया गया है। भगवती त्रिनेत्र स्वरूप हैं, अतः उन्हें नेत्रों द्वारा सम्पूर्ण लोकों को प्रकाशित करने का हेतु कहा गया। समस्त योनियों के पोषण करने के फलस्वरूप उन्हें 'वरदा' कहा गया। अत्यन्त कृपायुक्त, स्नेहयुक्त, दयामयी भगवती को 'स्मेरमुखी' (मन्द हास्य युक्त मुख वाली) माना गया है तथा उनके हाथ में शोभित अंकुश शासन शक्ति का प्रतीक है।

किसी भी साधना की सिद्धि के लिए गुरु और मंत्र पर विश्वास होना आवश्यक है।

साधना विधान

- इस साधना की आवश्यक सामग्री है **'भुवनेश्वरी यंत्र', 'सर्व सिद्धि प्रदायिनी गुटिका'** तथा **'भुवनेश्वरी माला'**।
- यह साधना 21 दिन की है।
- इस साधना को किसी भी माह में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से प्रारम्भ करें।
- साधक शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करें।
- लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाएं तथा उस पर चावल से 'ह्रीं' लिख कर **भुवनेश्वरी यंत्र** को स्थापित करें। यंत्र की बायीं ओर **सर्व सिद्धि प्रदायिनी गुटिका** रखें।
- यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें। फिर गुटिका का भी इसी प्रकार पूजन करें।
- तेल का दीपक लगायें।
- भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें –

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य।
मौलिस्फुरत्तारानायक शेखरां।।
स्मितमुखीमापीन वक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यां मणिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं।।
विभ्रतीं सौम्या रत्नघटस्थ।
सत्यचरणां ध्यायेत्पराम्बिकाम्।।

- ध्यान के पश्चात् भुवनेश्वरी माला से निम्न मंत्र का नित्य 51 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं ।।

AYEIM HREEM SHREEM

- साधना समाप्ति के पश्चात् यंत्र, माला तथा गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर –260/-

भुवनेश्वरी साधना

भुवनेश्वरी देवी, देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूपों में से भगवती महा सरस्वती का ही स्वरूप है, और अपने प्रभाव में महालक्ष्मी का प्रभाव समाहित किये हैं। आकस्मिक धन प्रदान करने की भगवती भुवनेश्वरी से अधिक शक्ति किसी भी देवी या देवता में नहीं है। यह गृहस्थ सुख को पूर्णता से प्रदान करने में समर्थ है तथा वर्षों से चली आ रही गृह कलह और वैमनस्य की स्थितियों को केवल भुवनेश्वरी साधना के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है। जिस स्त्री अथवा पुरुष की आयु का एक बड़ा भाग निकल जाने पर भी विवाह न हुआ हो उसके लिये यही साधना प्रभावकारी है। एक प्रकार से यह पूरे जीवन को संवारने की साधना है जो बाल, वृद्ध ,युवा सभी को उसकी आयु और आवश्यकता के अनुसार समुचित फल प्रदान करती है।

ध्यान :

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम्।

स्मेरमुखींवरदांकुशपाशांभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ।।

साधना विधि :

सम्पूर्ण विश्व का भरण - पोषण करने वाली त्रिभुवन की नियंता भुवनेश्वरी की साधना से अभाव रह ही क्या सकता है? रक्त वर्ण के वस्त्रों को धारण करने वाली इन भगवती को सर्वाधिक प्रिय है 'श्वेत रंग' और इसी अनुरूप इस साधना में श्वेत रंग का ही प्रयोग किया जाता है, चाहे वह श्वेत वस्त्र हो या आसन अथवा अर्पित किये जाने वाले पुष्प। किसी भी सोमवार अथवा शुक्रवार को प्रातः सात बजे से पहले ही पहले, स्वच्छ शुद्ध हो, यथोचित वस्त्र, आसन ग्रहण कर सामने ताम्र पात्र में **भुवनेश्वरी महायंत्र** स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम , श्वेत पुष्प एवं अक्षत से कर शुभ्र श्वेत **स्फटिक मणि माला** से ही निम्न भुवनेश्वरी महा मंत्र की ११ माला अथवा २१ माला मंत्र का जप करें। भुवनेश्वरी का मूल मंत्र तो " **ह्रीं** " ही है किन्तु गृहस्थ जीवन में सभी दृष्टियों से सफल रहने के लिए अथवा विद्या के क्षेत्र में सर्वोच्च रहने के लिए यदि इसमें वाग्भव बीज " **ऐं** " एवं लक्ष्मी बीज "**श्रीं**" का संयुक्तिकरण कर दिया जाता है तो इस प्रकार इन दो बीजों से सम्पुटित "**ह्रीं**" मंत्र का सौन्दर्य त्रिगुणित हो जाता है इस प्रकार यह मंत्र है -

मंत्र :

" ऐं ह्रीं श्रीं "

यंत्र को तो साधना स्थान में स्थापित रखें और माला को गले में धारण कर सकते हैं। केवल एक भुवनेश्वरी साधना से ही जीवन की प्रत्येक स्थिति का निराकरण संभव है, जिसका विस्तृत प्रयोग पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित करेंगे।

शून्य साधना की महाविद्या भुवनेश्वरी

वायुगमन भारतीय साधना पद्धति के अन्तर्गत मात्र कौतूहल या प्रयोग का विषय नहीं वरन् गम्भीर अर्थ समेटे है। भारत की यह प्राचीन महाविद्या योगियों की सबसे अधिक प्रिय विद्या रही है जिसके माध्यम से वे बिना किसी माध्यम के क्षणमात्र में इच्छित स्थान पर भी आ-जा सकते ही थे, साथ ही इसी विद्या के माध्यम से अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की भी पूर्ति कर सकते थे, क्योंकि जिसने वायुगमन अर्थात् शून्य गमन का आश्रय लिया वह स्वतः ही शून्य सिद्धि प्राप्त करने का अधिकारी भी हो ही जाता है। इसका कारण है कि व्यक्ति अपने शरीर को पंचतत्वात्मक स्वरूप (आकाश, जल, अग्नि, भूमि एवं वायु) से निकाल कर जब चतुर्वर्गात्मक स्वरूप में ले आता है तो वह स्वतः ही जीवन के अनेक दुर्लभ रहस्यों का ज्ञाता और उपभोग करने वाला हो ही जाता है।

दूसरी ओर आध्यात्मिक जगत में इस साधना का जो महत्व है उसकी तो कभी चर्चा ही नहीं की गयी। वायुगमन साधना का जहां एक ओर अर्थ है कि व्यक्ति अपने शरीर को वायु के समान हल्का बनाकर विचरण कर सके, वहीं यह शून्य आसन का भी रहस्य है। **वस्तुतः उच्चकोटि के योगी अपनी साधना हेतु जो आसन लगाते है वह धरती पर न होकर धरती से आठ दस फीट ऊपर शून्य में स्थित होता है क्योंकि**

वायुगमन, आकाश गमन, शून्य मार्ग सिद्धि और शून्य पदार्थ सिद्धि, इन सभी का मूल रहस्य एक ही बात में छुपा है! . . . कि कैसे शरीर का भूमि तत्व लुप्त किया जा सके, प्रस्तुत है, साधना के इस जटिल पक्ष से सम्बन्धित महाविद्या साधना पर आधारित गुह्य पद्धति . . .

उच्चकोटि की साधनाएं शुद्ध आसन के बिना सफल हो ही नहीं सकती जबकि यह धरा मल-मूत्र और निरन्तर रक्तपात से इस प्रकार दूषित हो गयी है जहां कोई भी स्थान पवित्र नहीं रह गया है। ऐसी दशा में साधक के समक्ष दो ही मार्ग बचते है कि या तो वह सिद्धाश्रम की पवित्र भूमि पर साधनाएं करे अथवा शून्य में आसन सिद्ध कर तीव्रता से आगे बढ़ सके।

योग-पद्धति के अन्तर्गत् यह साधना जिस प्रकार से सिद्ध की जाती है उसमें साधक को अपने नाभि प्रदेश को आलोड़ित और स्पंदित कर इस प्रकार एक सेकेण्ड में साठ हजार चक्र की गति से नाभि को घुमाना होता है जिससे शरीर स्वतः ही हल्का होकर वायु में उठ जाए। वायुयान का भी यही सिद्धान्त होता है किन्तु वर्तमान में योग की यह पद्धति न केवल कठिन वरन् दुर्लभ भी हो गई है। इसके लिए सतत् प्रयास एवं धैर्य की आवश्यकता पड़ती है तथा इस प्रकार से साधना करने के लिए समय की भी प्रचुरता होनी चाहिए जो कि विरक्त एवं घर-परिवार से अलग साधकों के लिए ही सम्भव होती है।

किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह विद्या केवल योगियों अथवा विरक्त साधकों की ही धरोहर है। कोई भी साधक जो तीव्रता से साधना में आगे बढ़ने का इच्छुक हो, शून्य आसन सिद्ध कर, उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न करते हुए

सशरीर सिद्धाश्रम में प्रवेश करने की भावना रखता हो वह इसे सिद्ध कर सकता है। भारतीय साधना पद्धति में कोई भी विद्या एक ही ढंग से सिद्ध की ही नहीं जाती है और विभिन्न साधना-पद्धतियों को प्रस्तुत करने का कारण भी यही है कि जिसके संस्कार जिस साधना पद्धति से मेल खा जाएं, वह उसे ही ग्रहण कर आगे बढ़ सके।

वायुगमन की इन्हीं पद्धतियों में एक पद्धति जो युगों से परीक्षित रही है वह है महाविद्या साधना पद्धति पर आधारित **भुवनेश्वरी साधना पद्धति**। महाविद्या साधनाएं केवल मां भगवती जगदम्बा के विभिन्न शक्ति स्वरूपों की ही साधनाएं नहीं है वरन् इनमें अलौकिक सिद्धियों के भी रहस्य छिपे हुए है और जब साधक प्रामाणिक पद्धति से साधनारत होता है तो उसे सफलता भी प्राप्त होती ही है। अंतर केवल यह होता है कि किसी को सफलता शीघ्र मिलती है और किसी को कुछ विलम्ब से, जिसके मूल में साधक का विश्वास, धैर्य, पूर्वजन्मकृत दोष आदि कारण निहित होते हैं।

अब क्षण आ गए हैं कि महाविद्या साधना से सम्बन्धित जो गोपनीय पक्ष हैं वे समाज के सामने प्रकट किये जाएं। प्रस्तुत साधना पद्धति इसी बात का प्रयास है . . . .

महाविद्या साधनाओं के अन्तर्गत् किस प्रकार से गोपनीय रहस्य छुपे है इसका ज्ञान मुझे तब हुआ जब मेरी भेंट अभी कुछ दिन पूर्व **स्वामी प्रबोधानन्द जी** से हुई। योगीराज अब तक इस भौतिक देह से अस्सी वर्ष सम्पूर्ण कर चुके है, यद्यपि योगी की वास्तविक आयु का किसे ज्ञान हो सका है? जिस प्रकार मैंने उनको तीस वर्ष पूर्व मनाली के समीप व्यास आश्रम के पास निश्चिंत, तृप्त और आह्लादित अनुभव किया था, वे उसी अनुसार ही मिले। उसी प्रकार उनके तन पर मात्र एक धोती पड़ी थी जिसे वे ओढ़े भी थे और पहने भी थे तथा निश्छल भाव से उसी प्रकार कौतुक से भरे थे, जो उनकी चिरपरिचित शैली हुआ करती थी।

ज्यों प्रकृति का स्वरूप क्षण क्षण में परिवर्तित होता रहता है और जिस प्रकार कोई अबोध शिशु उसे देखकर आश्चर्य में भरा रहता है वही स्वरूप है योगीराज प्रबोधानन्द जी का। हम लोगों के शब्दों में 'योगीराज', पूज्य गुरुदेव के लिए केवल प्रबोध! और जिस प्रकार पूज्य गुरुदेव उन्हें पुकारते थे उससे प्रतीत होता था मानो कह रहे हो "अबोध"। सचमुच उनका सम्पूर्ण व्यवहार इतना ही निश्छल और निर्मल रहा करता था। मुझे लगा ही नहीं कि मैं उनसे इतने लम्बे अंतराल के बाद मिल रहा हूं और वे भी बच्चों की ही तरह अपनी सारी बातें बताने की हड़बड़ी में भरे थे। **जहां उच्चकोटि के साधक अनुभूतियों की चर्चा करने पर बात को दूसरा मोड़ दे देते है अथवा मौन हो जाते है वहीं प्रबोधानन्द जी सदैव से अपनी साधनाओं के मध्य हुई अनुभूतियों को खुलकर ही बताते रहे हैं,** वस्तुतः उन्हें लगता ही नहीं था कि वे साधनात्मक जीवन की चर्चा कर रहे है अपितु वे तो सरल भाव से मां लीलाविहारिणी के भाव राज्य में जो कुछ भी सूक्ष्म दृष्टि से घटित होता देखते थे उसे कौतूहलवश बताए बिना रह ही नहीं पाते थे, यद्यपि इसके लिए उन्हें कई बार पूज्य गुरुदेव की कड़ी डांट पड़ी लेकिन वे अपने को बदल नहीं पाए।

पिछले दिनों जब मैं पुनः मनाली की ओर गया तो ठीक उसी स्थान पर उनसे अचानक भेंट हो गयी और तीस वर्षों का अंतराल तीस सेकेण्ड में समाप्त हो गया। मैंने उन्हें अपनी स्थितियों के विषय में बताया और वे भी पहले की अपेक्षा कुछ गंभीर होकर मेरे साथ साधनात्मक चर्चाओं में डूब गए। उन्हीं से मुझे ज्ञात हुआ कि अलग होने के बाद पूज्य गुरुदेव ने उन्हें उनकी प्रिय साधना भुवनेश्वरी महाविद्या साधना को पूर्णता से सम्पन्न करने की आज्ञा दी थी और वे इसे निर्विघ्न रूप से सम्पन्न करने के लिए कहीं एकांत में चले गए थे। **स्वामी प्रबोधानन्द जी** से ही मुझे ज्ञात हुआ कि महाविद्या साधनाएं तो अपने-आप में सम्पूर्ण साधना पद्धति है। **ये केवल सांसारिक विषयों तक ही सीमित नही अपितु अष्टादश सिद्धियों को भी अपने में समेटे है और स्वामी जी के ही अनुसार अब समय आ गया है जब जनसामान्य के मध्य इनकी विशदता की चर्चा कर इन्हें सम्मानपूर्ण स्थान दिलाया जाए।** समाज आज महाविद्या साधनाओं में से केवल एक

महाविद्या बगलामुखी से ही परिचित है जबकि शेष नौ महाविद्या साधनाएं भी अत्यंत उच्चकोटि की और गृहस्थ वर्ग द्वारा अपनाई जाने योग्य है।

स्वामी जी ने मुझे बताया कि जब उन्होंने पूज्य गुरुदेव द्वारा बतायी विधि से भुवनेश्वरी साधना प्रारम्भ की तो प्रारम्भ से ही उनकी भूख प्यास आदि शनैः शनैः समाप्त होती गयी और वे धीमे-धीमे एक अनिर्वचनीय सुख में डूबे रहने लग गए। मल-मूत्र त्याग की आवश्यकता न होने के कारण उनके आनन्द में कोई विघ्न नहीं पड़ता था **और इसी अवस्था के दौरान जब एक दिन उनकी आंख खुली तो उन्होंने पाया कि वे जमीन से तीन चार फुट की ऊंचाई पर पद्मासन में ही स्थित है।** वे अपने को एकाएक ऐसी दशा में देखकर घबरा गए किन्तु कुछ समय बाद स्थिति सामान्य हो गयी। बाद में तो यह दशा जब-तब उत्पन्न होने लग गयी और वे भी इसके अभ्यस्त हो गए। साथ ही उन्होंने अनुभव भी किया कि इस दशा में उनके चित्त में एक अतिरिक्त निर्मलता, शीतलता और शांति आ जाती है।

इसके बाद तो उन्होंने अन्य महाविद्या साधनाएं भी की उनके अलौकिक रहस्य ढूंढे और विलक्षण अनुभूतियां प्राप्त की किन्तु निष्कर्ष रूप में यही कह सके कि भुवनेश्वरी महाविद्या से श्रेष्ठ कोई भी अन्य महाविद्या नहीं है क्योंकि भुवनेश्वरी साक्षात् प्रकृति स्वरूपा एवं ब्रह्म स्वरूपा महाविद्या जो है। यही वे महाविद्या है जो योगियों व गृहस्थों के मध्य समान रूप से लोकप्रिय व हितकारी है। **जिस प्रकार षोडशी त्रिपुर सुंदरी के साधक को भोग एवं मोक्ष दोनों ही सुलभ होते है उसी प्रकार भुवनेश्वरी के साधक को भी। षोडशी की अपेक्षा इनकी साधना और भी अधिक सहज व शीघ्र सिद्ध होने वाली है।** गृहस्थ सुख की पूर्णता के लिए तो समस्त महाविद्याओं में भुवनेश्वरी के अतिरिक्त कोई महाविद्या है ही नहीं।

भुवनेश्वरी साधना के विविध पक्षों में से हम इस बार जो साधना प्रस्तुत कर रहे है वह पूर्ण रूप से शून्य साधना सिद्धि पर आधारित है जिसके फलस्वरूप साधक वायुगमन की क्रिया में तो निष्णात होता ही है साथ ही साथ शून्य साधना के अनेक अन्य लाभ प्राप्त करने का अधिकारी भी बन जाता है। **प्रस्तुत साधना विधान स्वामी प्रबोधानन्द जी द्वारा स्वयं खोजी गयी पद्धति पर आधारित है।**

इस साधना को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक के लिए आवश्यक है कि वह किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के सोमवार अथवा शुक्रवार को रात्रि में दस बजे के बाद साधना में प्रवृत्त हो। वस्त्र, आसन, सामने बिछाया जाने वाला कपड़ा श्वेत हो तथा स्नान आदि कर स्वच्छ मनोभाव के साथ साधना को प्रारम्भ करें। सर्वप्रथम आचमनी से तीन बार जल ले कर पी लें और अपने आसन का पुष्प, अक्षत, कुंकुम से पूजन कर निम्न प्रकार से न्यास करें—

हृदयादि न्यास	**कर न्यास**
ह्रीं हृदयाय नमः	**ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः**
श्रीं शिरसे स्वाहा	**श्रीं तर्जनीभ्यां नमः**
ऐं शिखायै वषट्	**ऐं मध्यमाभ्यां नमः**
ह्रीं कवचाय हुं	**ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः**
श्रीं नेत्र त्रयाय वौषट्	**श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः**
ऐं अस्त्राय फट्	**ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**

उपरोक्त ढंग से न्यास करने के बाद अपने समक्ष **प्राण-प्रतिष्ठित भुवनेश्वरी यंत्र** स्थापित कर उसका सामान्य पूजन कर एक **सियार सिंगी** को भी स्थापित करें जो प्राणों को उर्ध्व गति देने में सक्षम होती है। **पारद गुटिका** का इस साधना में सर्वोपरि महत्व है क्योंकि पारद के माध्यम से व्यक्ति अपने शरीर में से भूमितत्व का लोप एवं पुनर्स्थापन कर सकता है। इन सभी सामग्रियों को भी यंत्र के समीप रख दें। इनका पूजन आवश्यक नहीं है। इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी की निम्न प्रकार से स्तुति एवं ध्यान करें—

नमस्ते समस्तेशि बिन्दुस्वरूपे नमस्ते रसतत्वेन तत्वाभिधाने।
नमस्ते महत्वं प्रपञ्चप्रधाने नमस्ते त्वहंकारतत्वस्वरूपे।।
नमः शब्द रूपे नमो व्योमरूपे नमः स्पर्श रूपे नमो वायुरूपे।
नमो रूपतेजोरसाम्भः स्वरूपे नमस्तेस्तु गन्धात्मिकेभूस्वरूपे।।

इसके बाद **भुवनेश्वरी माला** से मूल मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें।

मंत्र

“ह्रीं”

मंत्र जप के उपरांत दूसरे दिन **पारद गुटिका को छोड़** शेष सामग्री विसर्जित कर दें जबकि पारद गुटिका को अपने शरीर पर धारण कर लें। आगे के समय में दिन में जब भी अवसर मिले उपरोक्त मंत्र को तीस मिनट तक जपें। इसमें माला, दिशा आदि का बंधन नहीं है केवल शुद्धता होनी आवश्यक है। एक माह बीतते-बीतते साधक को इस दिशा में पर्याप्त अनुभूति होनी प्रारम्भ हो जाती है। **यह ध्यान रखें कि यह मूल रूप से भुवनेश्वरी महाविद्या की साधना नहीं वरन् उनके एक विशेष प्रभाव की साधना है। पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी साधना को सिद्ध करने की पद्धति सर्वथा भिन्न है।**

❋

भुवनेश्वरी साधना

जिसे रावण [illegible] पर विजय प्राप्त करने के लिए भगवान राम ने स्वयं सम्पन्न किया था...

सारी रात हनुमान ने आंखों में बिता दी थी। उन्हें पल भर भी नींद नहीं आई थी . . . अभी हाल ही में गुप्तचर संदेश लेकर आया था, कि रावण ने युद्ध में विजय हेतु महाचण्डी यज्ञ का प्रारम्भ कर दिया है। उसने देश भर के उत्कृष्ट विद्वानों को आमंत्रण भेजा था, और वे सभी इकट्ठे हो गए थे। बस दो दिन बाद से ही इस महायज्ञ का प्रारम्भ हो जाएगा, और अगर वह यज्ञ किसी प्रकार से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाए, तो रावण की विजय सुनिश्चित है . . . यही सब सोचकर अंजनी सुत सारी रात गंभीर चिंतन में इधर-उधर टहलते रहे . . .

युद्ध में रावण की स्थिति दयनीय हो गई थी। उसके समस्त उच्चकोटि के योद्धा मारे गए थे . . . सभी काल कवलित हो गए थे और वह निस्सहाय, निरुपाय मां चण्डी के आशीर्वाद के लिए लालायित था . . .

पर हनुमान को चैन कहां, वे तो निरन्तर इसी चिंतन में थे, कि किस प्रकार से राम के सामने आने वाली विपदा को पहले से ही ध्वस्त कर दिया जाए ; किस प्रकार से उनके कंटकाकीर्ण मार्ग को पुष्पों से आच्छादित कर दिया जाए, ताकि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े . . .

और इसके लिए अगले ही दिन हनुमान एक विप्र का रूप धर कर पहुंच गए यज्ञ स्थली पर और वहां पहुंच कर सभी ऋषि-मुनियों की पूर्ण श्रद्धा भाव से सेवा करने लगे। उनकी निःस्वार्थ सेवा भावना से सभी ऋषि-मुनि इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विप्र के रूप में आए हनुमान को वर मांगने को कहा।

"नहीं-नहीं महात्मन् ! मैंने किसी प्रयोजन से आपकी सेवा नहीं की थी . . . मैं तो मात्र आपका साहचर्य लाभ प्राप्त करना चाहता था" – हनुमान ने विनम्रता पूर्वक कहा।

पर ऋषि भी कब मानने वाले थे . . . उनके बार-बार आग्रह करने पर कपिश्रेष्ठ ने एक अति विस्मित करने वाला वर मांगा, जो कि आगे जाकर राम की विजय का एक मुख्य कारण बना . . .

महाचण्डी यज्ञ में जिस मंत्र के संपुटीकरण से हवन किया जाना था, वह था . . .

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि,
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते।

इसमें भूतार्तिहारिणी का अर्थ है सभी प्राणियों की पीड़ा हरने वाली। हनुमान ने ऋषियों से यह वर मांगा कि वे भूतार्तिहारिणी में 'ह' की जगह 'क' का उच्चारण कर दें। बेचारे ऋषि तो वचन बद्ध थे ही, उन्होंने तथास्तु कह दिया। इस प्रकार वह शब्द बन गया '**भूतार्तिकारिणी**' जिसका अर्थ है सभी प्राणियों को कष्ट देने वाली।

इस प्रकार एक अक्षर के बदलने मात्र से यज्ञ रावण के लिए ही अनिष्टकारी बन गया।

परन्तु इसके बाद भी हनुमान चैन से नहीं बैठे। वे तत्काल भगवान राम के पास पहुंचे और विनम्रता पूर्वक कहा –

"प्रभु ! हमारे युद्ध कौशल के आगे रावण की समस्त सेना का विध्वंस हो चुका है, हमारी रणनीति और आपके आशीर्वाद द्वारा उनका अत्यधिक अहित हो चुका है, परन्तु . . ."

"परन्तु क्या कपिश्रेष्ठ ?" – राम बोले।

– परन्तु रावण अभी भी जीवित है और वही हमारा मुख्य एवं प्रबलतम शत्रु है। उसकी नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित

है, जिससे वह सदैव चिर-यौवन वान बना रहता है और जिसके फलस्वरूप उसकी मृत्यु संभव नहीं . . .

इसके अलावा भी वह अपने कई आत्मजों के शवों को खो चुका है . . . यहां तक कि उसकी विजय का आखिरी प्रयास महाचण्डी यज्ञ भी आपकी कृपा से विफल हो चुका है। अतः वह एक घायल सिंह की भांति हो गया है और आप तो जानते ही हैं, कि सौ सिंहों से एक घायल सिंह अधिक खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

वैसे भी वह बड़ा मायावी और प्रपंची है। उच्चकोटि की सिद्धियां उसके पास हैं और समस्त प्रकृति को वह अपने नियंत्रण में ले चुका है . . . सारी प्रकृति उसके इशारों पर नृत्य करती है। साथ ही साथ उसके पास अद्वितीय दिव्यास्त्रों की भरमार है और उनमें कुछ तो ऐसे हैं जो समस्त ब्रह्माण्ड को विनष्ट करने में सक्षम हैं।

तो तुम्हारा क्या विचार है हनुमान? – राम ने पूछा।

"प्रभु के आशीर्वाद से मुझे स्मरण आ रहा है, कि बाल्यावस्था में शिक्षा प्राप्त करने के दौरान मुझे एक अद्वितीय महातेजस्वी साधना पद्धति मेरे गुरु सूर्यदेव ने प्रदान की थी, जो भुवनेश्वरी से सम्बन्धित है। उनके अनुसार समस्त देवियों की शक्ति को भुवनेश्वरी के रूप में सिद्ध कर लेने से वह साधक अजेय हो जाता है और फिर उसके सामने समस्त त्रैलोक्य के देवता, दानव, मनुष्य, गन्धर्व आदि भी युद्ध में टिक नहीं सकते। जिस क्षण यह साधना सम्पन्न होती है, उसी क्षण से शत्रु काल के सुपुर्द हो जाता है और उसका विनाश उतना ही निश्चित हो जाता है, जितना कि सूर्य और चन्द्र का अस्तित्व में होना।"

– और प्रभु राम मुस्करा दिए, प्रभु अपने भक्त की प्रसन्नता के लिए स्वयं विष्णुवतार होते हुए भी शिष्य/भक्त हनुमान के निवेदन पर उसी क्षण भुवनेश्वरी साधना एवं अनुष्ठान का प्रारम्भ किया एवं उसे सफलता पूर्वक सम्पन्न किया . . .

– और इतिहास भी इस बात का गवाह है, कि जो रावण नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित होने की वजह से अजेय था, अंततः काल के विकराल पंजों से बच नहीं पाया . . .

वास्तव में ही यह साधना अपने-आप में महातेजस्वी अद्वितीय एवं अनिवर्चनीय है। ऐसा आज तक हुआ ही नहीं, कि व्यक्ति यह साधना सम्पन्न करे और उसका परिणाम उसे न मिले। ऊपर दिए गए संदर्भ में इस साधना का एक ही तथ्य स्पष्ट किया गया है। **वैसे इसके सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर निम्न स्थितियां साधक के जीवन में अंकुरित हो जाती हैं –**

1. साधक का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है। उसके इर्द-गिर्द एक तेजयुक्त आभा मण्डल निर्मित हो

और उसी क्षण राम ने अपने प्रिय शिष्य हनुमान के निवेदन पर भुवनेश्वरी साधना एवं अनुष्ठान का प्रारम्भ किया एवं उसे सफलता पूर्वक सम्पन्न किया . . . और इतिहास भी इस बात का गवाह है, कि जो रावण नाभि में अमृत कुण्ड स्थापित होने की वजह से अजेय था, अंततः काल के विकराल पंजों से बच नहीं पाया . . .

जाता है, जिससे उसके आसपास के लोग स्वतः उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी हर आज्ञा का ना-नुच किए बिना पालन करते हैं।

2. यह साधना सिद्ध होते ही व्यक्ति की दरिद्रता, रोग, शत्रुभय, ऋण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट हो जाती है और वह मान-सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करने लगता है।

3. व्यक्ति के घर में निरन्तर धन का आगमन होता ही रहता है। उसका व्यापार तरक्की करता है और अगर वह नौकरी पेशा हो, तो उसकी पदोन्नति शीघ्र होती है।

4. इस साधना के प्रभाव से घर में अगर कोई तांत्रिक प्रयोग हो, तो वह नष्ट होता है।

5. कुण्डली में निर्मित दुर्योग फलहीन हो जाते हैं . . . अगर दुर्घटना एवं अकाल मृत्यु का योग हो, तो वह भी अल्प हो जाता है, एक प्रकार से नष्ट ही हो जाता है।

6. साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें विजय ही प्राप्त करता है, हर क्षेत्र में सफल होता है। इंटरव्यू, परीक्षा आदि में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

7. ऐसा व्यक्ति समाज में सम्माननीय एवं पूजनीय होता है। उच्चकोटि के मंत्रीगण एवं अधिकारी भी उसकी बात को मस्तक पर धारण करते हैं। वह सभी का प्रिय होता है और जीवन में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता।

8. इसके साथ ही साथ उसका पारिवारिक जीवन अत्यधिक सुखी होता है, यदि कोई क्लेश व्याप्त हो, तो भी वह समाप्त हो जाता है।

9. उसकी समस्त इच्छाएं और कामनाएं पूर्ण होती हैं और वह स्वयं भी आश्चर्य चकित रह जाता है, कि किस प्रकार से उसकी सारी अभिलाषाएं स्वतः ही पूर्ण हो रही हैं।

10. भगवती भुवनेश्वरी वास्तव में सम्पूर्ण 64 कलाओं से परिपूर्ण हैं, अतः इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति को

जहां भोग, धन, वैभव, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, वहीं वह अन्त में मोक्ष की स्थिति प्राप्त कर ब्रह्मलीन हो जाता है . . . और आवागमन के चक्र से छूट जाता है।

ऊपर बताई गई स्थितियां तो मात्र सूर्य को रोशनी दिखाने के समान हैं। वास्तव में तो वह अपने-आप में ही अद्वितीय तेजस्वी युगपुरुष बन जाता है। उसके अन्दर शक्ति का वह तीव्र प्रवाह समाहित हो जाता है, जिससे काल भी उसके सामने आने से भयभीत होता है। साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान-विज्ञान में पारंगत हो वर्तमान पीढ़ी का मार्गदर्शन करने में सक्षम हो पाता है और आने वाली पीढ़ियां उसे दिव्य पुरुष की संज्ञा से विभूषित कर आदर भाव से देखती हैं।

साधना विधान

यह भुवनेश्वरी साधना विधान वास्तव में शक्ति साधना का ही स्वरूप है और एक तरह से मात्र इस साधना को करने से आद्य शक्ति के समस्त स्वरूपों की साधना स्वतः ही हो जाती है। यह 9 दिन की साधना है और 1. 1. 99 से अथवा किसी भी मास के प्रथम दिन से इसे प्रारम्भ करना चाहिए। नवरात्रि के अवसर पर इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है।

इस साधना में निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है। **1. भुवनेश्वरी यंत्र, 2. मूंगे का दाना, 3. भुवनेश्वरी माला।**

निर्धारित दिवस की रात्रि में दस बजे के उपरान्त साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर श्वेत स्वच्छ धोती धारण कर श्वेत आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। गुरु चित्र का स्थापन करें तथा '**दैनिक साधना विधि**' पुस्तक में दी गई विधि से गुरु पूजन करें। अपने सामने लाल वस्त्र से ढके बाजोट पर भुवनेश्वरी यंत्र स्थापित कर उसका (कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प) पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें। फिर साधक दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न प्रकार से विनियोग करें –

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः ॥ गायत्री छन्दः, भुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजं, ईं शक्तिः ॥ रं कीलकं सकल-मनोवांछित-सिद्ध्यर्थ पाठे विनियोगः ॥

जल भूमि पर छोड़ दें तथा शरीर के विभिन्न अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए निम्न न्यास सम्पन्न करें –

ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि ॥
गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥
श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि ॥
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥
ईं शक्तये नमः नाभौ ॥
रं कीलकाय नमः पादयोः ॥
सकल-मनोवांछित सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

फिर मूंगे का दाना अगर मन में कोई इच्छा विशेष हो, तो उसे सोचकर निम्न मंत्रों से यंत्र पर अर्पित करें –

भुवनेश्वरी ध्यान

उद्यद्दिनद्युति मिन्दु किरीटान्तुङ्ग कुचान्नयनत्र युक्ताम्
स्मेरमुखीं व्वरदाङ्कुश पाशांभीति करामप्रभुजे भुवनेशीम्

फिर '**भुवनेश्वरी माला**' पर सिंदूर से तिलक करें तथा उसी माला से निम्न मंत्र की **101** माला मंत्र जप करें –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ॐ ॥

Om Hreem Om

फिर नित्य साधना करने से पूर्व यंत्र एवं मूंगे के दाने का तिलक कर पूजन करने के बाद ही भुवनेश्वरी माला से **101** मालाएं मंत्र जप करें। ऐसा नौ दिन तक करें, उसके उपरांत समस्त साधना सामग्री को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से साधना निश्चय ही सिद्ध होती है। इसमें कोई संशय नहीं।

निश्चित ही यह साधना एवं मंत्र परम गोपनीय और सामान्यतः अप्राप्य है, पर जिस किसी को भी यह साधना सिद्ध हो जाती है उसके भाग्य से तो स्वयं देवी-देवता भी ईर्ष्या करने लगते हैं और वह दिनों-दिन ऊंचाई की ओर अग्रसर होता ही रहता है।

साधना सामग्री पैकेट – 240/-

03.9.98

ऋण-मोचन के लिए सर्वोत्तम

भुवनेश्वरी महाविद्या साधना

ऋण से ग्रसित होना व्यक्ति के लिए एक प्रकार से अभिशाप है। दरिद्रता एवं ऋण भार से लदे होने पर व्यक्ति का सारा व्यक्तित्व इस प्रकार से प्रभावित हो जाता है, कि वह जीवित रहते हुए भी मृतक के समान होता है। एक प्रकार से देखा जाए, तो आज के युग में सबसे बड़ा कष्ट ऋण भार से दबा होना ही है। ऋण रूपी जहर व्यक्ति के पूरे परिवार के साथ-साथ उसके मस्तिष्क पर भी प्रभाव डालता है। जितना ही वह ऋण के इस दलदल से बाहर निकलने का प्रयास करता है, उतना ही उसमें फंसता चला जाता है।

एक ऋण को उतारने के लिए वह दूसरा ऋण लेता है और इस आशा में रहता है, कि किसी न किसी तरह से ऋण को उतार दूंगा, लेकिन यह दलदल ऐसा है, कि जिससे उभर कर बहुत ही कम व्यक्ति आ पाते हैं। मनुष्य के जीवन में तीन प्रकार के ऋण प्रमुखतः होते हैं, जिनको उन्हें समय रहते उतार देना चाहिए। इसमें प्रथम ऋण माता-पिता का, द्वितीय गुरु का और तृतीय ऋण धन का होता है।

१. मातृ-पितृ ऋण

माता-पिता का ऋण व्यक्ति पर इसलिए होता है, कि उनके कारण ही वह मनुष्य जीवन में प्रवेश कर सका है और इस संसार में सभी प्रकार के आनन्द व सुख का मार्ग प्राप्त कर सका है। अतः जो व्यक्ति अपने जीवन में माता-पिता की सेवा नहीं करता है, उसे ऋण दोष लगता है और यह दोष उसे इस जीवन में नहीं, तो अगले जीवन में उतारना ही पड़ता है।

२. गुरु ऋण

दूसरा ऋण गुरु ऋण होता है। गुरु का तात्पर्य है, जो आपको दीक्षा दे, ज्ञान दे, जीवन के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराए, उस गुरु के प्रति यदि जाने-अनजाने दोष हो जाए, अवज्ञा हो जाए, गुरु का अपमान हो जाए, गुरु के वचनों का पूर्ण रूप से पालन न किया जाए या गुरु सेवा में कमी बनी रहे अर्थात् मन, वचन, कर्म से किसी भी रूप में गुरु के प्रति श्रद्धा में कमी आने पर गुरु का ऋण सहस्रगुना बढ़ जाता है। गुरु ऋण व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार जुड़ जाता है, कि उसे सांसारिक जीवन में बाधाओं के चंगुल में फंसा देता है और इस महाचंगुल से मुक्ति पाने का उपाय गुरु के पास ही होता है।

३. लक्ष्मी ऋण

व्यक्ति के जीवन में जो तीसरा ऋण है, वह आर्थिक ऋण है, जो व्यक्ति अपनी क्षमता के बाहर अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सांसारिक भोग-विलासों में डूबने हेतु, झूठी शान-शौकत में वृद्धि करने हेतु ऋण लेता है, उसे जीवन में आर्थिक ऋण का बोझ ढोना पड़ता है। इसके अतिरिक्त असत्यभाषी, आलसी, क्रियाहीन और साधनहीन व्यक्ति भी जीवन में आर्थिक ऋण के बोझ से व्यथित रहता है।

यदि व्यक्ति अपने जीवन में उपरोक्त ऋणों में से कोई एक भी ऋण पूरा नहीं करता है, तो ये दोष उसके जीवन में प्रभाव डालते हैं और इन्हीं कारणों से मनुष्य दरिद्रता का सामना करता है, उसे आगे बढ़ने के साधन उपलब्ध नहीं होते हैं। घर-परिवार में कलह का वातावरण रहता है, व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक तौर पर दुःखी रहता है और उसका जीवन एक प्रकार से नीरस एवं कष्ट से गुजरते हुए बीत जाता है।

यदि कोई व्यक्ति ऋण भार से ग्रस्त हो जाता है, तो उसका निवारण एकमात्र गुरु मार्गदर्शन एवं साधनात्मक उपाय से ही सम्भव है। ऋण-मुक्ति के तो कई साधनात्मक उपाय व विधान हैं, परन्तु भगवती भुवनेश्वरी की साधना से श्रेष्ठतम कोई अन्य उपाय नहीं है।

यह एक सौम्य महाविद्या साधना है, जिसे स्त्री अथवा पुरुष कोई भी निःसंकोच सम्पन्न कर सकता है। महर्षि वशिष्ठ ने कहा है, कि भुवनेश्वरी महाशक्ति लक्ष्मी का साक्षात रूप हैं और जो जीवन में आर्थिक समृद्धता एवं सम्पन्नता चाहते हैं, उन्हें भुवनेश्वरी साधना तो करनी ही चाहिए।

'त्रिजटा अघोरी' का कहना है, कि भुवनेश्वरी देवी की साधना से एक तरफ जहां लक्ष्मी प्रसन्न होकर पूर्णता देती है, वहीं दूसरी ओर यह साधना शत्रुसंहार में भी अद्भुत सफलतादायक है।

'योगीराज विशुद्धानन्द' ने कहा है, कि भुवनेश्वरी यंत्र में सैकड़ों लक्ष्मीदायक शक्तियों का निवास है। यह यंत्र शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त करने में भी अद्भुत सफलतादायक है।

वास्तव में देखा जाए, तो ऋण भी एक प्रकार से मनुष्य का शत्रु है, जो कि नित्य व्यक्ति को मानसिक यंत्रणा देकर डराता रहता है। इसके कारण व्यक्ति न तो ठीक से भोजन कर पाता है, न तो सो पाता है और न अपने अधूरे कार्यों को पूर्णता ही दे पाता है।

जो साधक जीवन में पूर्णता, गृहस्थ सुख-शान्ति, व्यापार में उन्नति, आर्थिक स्थिरता, ऋणों से मुक्ति या दूसरे शब्दों में भोग और मोक्ष प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें ऋण मुक्ति के लिए भगवती भुवनेश्वरी साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

व्यक्ति के जीवन में जाने-अनजाने में दोष हो ही जाते हैं, न चाहते हुए भी उसे इन वर्णित ऋणों में से किसी न किसी ऋण से ग्रसित होना पड़ता है और इसका सर्वश्रेष्ठ उपाय यही है, कि वह ऋण मुक्ति की यह दुर्लभ साधना सम्पन्न कर ले।

भगवती भुवनेश्वरी का स्वरूप अपने आप में पूर्ण रूप से मननामय है। दस महाविद्याओं में इनका एक पृथक और विशिष्ट स्थान है। गुरु गोरखनाथ ने तो भुवनेश्वरी साधना सिद्ध करने के पश्चात अपने ज्ञानबल और साधनाबल से यह अनुभव किया था, कि जीवन में अन्य देवी-देवताओं की साधना करना ही व्यर्थ है। यदि कोई साधक पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी भी दृष्टि से कोई भी अभाव नहीं रहता है।

तंत्रसार के अनुसार भुवनेश्वरी साधना सिद्ध करने से पुरुष अथवा स्त्री का सारा शरीर एक अपूर्व सम्मोहन अवस्था में आ जाता है, जिसके व्यक्तित्व से लोग प्रभावित होने लगते हैं और वह जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता है। इस प्रकार यह अनुभव किया गया है, कि भगवती भुवनेश्वरी साधना से ऋण मुक्ति के साथ-साथ असाध्य रोग भी समाप्त से हो जाते हैं।

भगवती भुवनेश्वरी साधना की शास्त्रों में अनेक विधियां प्रचलित हैं, किन्तु ऋण मुक्ति की यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना है, जिसको सम्पन्न करने पर साधकों ने तत्काल लाभ प्राप्त किया है।

ज्ञानेन्द्र कुमार एक अच्छी कम्पनी में इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे। उन्हें कम्पनी की तरफ से अच्छा वेतन व अन्य सुविधाएं प्राप्त थी, किन्तु वे वेतन से धन की बचत नहीं कर पाते थे। सेवा निवृत्ति के कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने कम्पनी से मकान बनवाने हेतु ऋण लिया, जिसे उन्हें वेतन से मासिक किश्तों पर अदा करना था। किन्हीं कारणवश वह सेवा निवृत्ति तक ऋण को अदा नहीं कर पाए, जिसके कारणवश कम्पनी ने उनका नया मकान अपने कब्जे में ले लिया। साथ ही उनके भविष्यनिधि खाते की राशि व अन्य देय भुगतान भी रोक दिया और कम्पनी ने जो मकान दिया था, उसे भी खाली करने का आदेश कर दिया।

इन परिस्थितियों के कारण ज्ञानेन्द्र कुमार अत्यन्त दुःखी हो गए। उनको कुछ भी उपाय न सूझा और वे एकदम हताश व निराश हो गए। संयोगवश उन्हीं के एक मित्र ने उन्हें
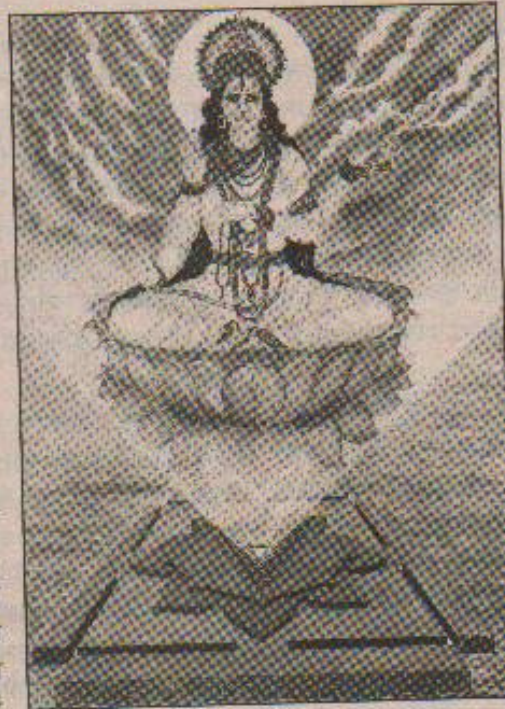
> 'त्रिजटा अघोरी' का कहना है, कि भुवनेश्वरी की साधना से जहां एक तरफ लक्ष्मी प्रसन्न होकर पूर्णता देती है, वहीं दूसरी ओर यह साधना शत्रु संहार में भी अद्भुत सफलतादायक है। 'योगीराज विशुद्धानन्द' ने कहा है, कि भुवनेश्वरी यंत्र में सैकड़ों लक्ष्मीदायक शक्तियों का निवास है तथा यह यंत्र शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त करने में अद्भुत सफलतादायक है।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका पढ़ने को दी। पत्रिका का अध्ययन करने के बाद वे पूज्य गुरुदेव से भेंट करने आए और सारी व्यथा कह सुनाई। पूज्य गुरुदेव ने आश्वासन देते हुए कहा, कि चिन्ता करने की ऐसी कोई बात नहीं है, यदि भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न कर ली जाए, तो समस्या का निवारण शीघ्र ही हो जाएगा।

घर आकर पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार ज्ञानेन्द्र कुमार ने साधना सम्पन्न की। साधना समाप्ति के मात्र दो ही दिनों बाद कम्पनी ने उनका नवनिर्मित भवन सौंपते हुए ऋण को किश्तों में चुका देने की सुविधा प्रदान कर दी। साथ ही कम्पनी ने उन्हें उनके भविष्यनिधि की जमा राशि का आधा भुगतान कर दिया। इसकी सूचना उन्होंने पूज्य गुरुदेव को दी। पूज्य गुरुदेव ने उन्हें एक श्रेष्ठ मुहूर्त पर उस धन से एक व्यवसाय आरम्भ करने की सलाह दी।

धीरे-धीरे इंजीनियरिंग से सम्बन्धित व्यवसाय अच्छा चलने लगा और कुछ समय पश्चात उन्होंने कम्पनी का सम्पूर्ण ऋण अदा कर दिया। आज उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ है और वे पूर्ण सुख-समृद्धि के साथ जीवन जीते हुए आध्यात्मिक उन्नति की ओर भी अग्रसर है।

ऋण मुक्ति की जो गोपनीय साधना उन्होंने पूज्य गुरुदेव से प्राप्त की थी, वह इस प्रकार है –

साधना विधान

यह प्रयोग ३.९.९८ को सम्पन्न करें या किसी भी सोमवार की रात्रि ९:०० बजे स्नानादि से निवृत्त होने के उपरान्त, स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सफेद ऊनी आसन पर बैठकर प्रारम्भ करें।

अपने सामने बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर दाहिनी ओर गुरु चित्र स्थापित करें। तांबे के किसी पात्र में **'भुवनेश्वरी यंत्र'** स्थापित करें। यंत्र के सम्मुख **'श्वेताभ माला'** स्थापित करें।

'गुरु संध्या' पुस्तक के अनुसार गुरु पूजन करें। दीपक शुद्ध घी का प्रज्वलित होना चाहिए। इसके पश्चात् संकल्प लें। जल अपने दाहिने हाथ में लेकर अपने नाम व गोत्र का उच्चारण करते हुए तिथि, संवत, वार, स्थान आदि का स्पष्ट उच्चारण करते हुए कहें, "मैं ऋण मुक्ति तथा समस्त रोग दोष निवारण के लिए यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं और मुझे इसमें पूर्ण सफलता प्राप्त हो।"

जल को भूमि पर छोड़ दें।

इसके पश्चात् स्वयं के माथे पर कुंकुम का तिलक करें और **'भुवनेश्वरी यंत्र'** को पवित्र जल से स्नान कराकर स्वच्छ कपड़े से पोंछ लें। यंत्र पर कुंकुम का तिलक करें और पुनः उसी स्थान पर स्थापित कर दें। **'श्वेताभ माला'** को भी पवित्र जल से स्नान कराएं। यंत्र तथा माला का पूजन कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य से करें।

इसके पश्चात् हाथ जोड़कर भगवती भुवनेश्वरी का निम्न रूप से ध्यान करें –

चंचन्मौक्तिक हेम मंडन युता माताति रक्ताम्बरा,
तन्वंगी नवनत्रयातिरुचिरा बालार्क वद् भासुरा,
या दिव्यांकुशपाश भूषितकरा देवी सदा प्रीतिहा,
चित्तस्था भुवनेश्वरी भवतु नः सेयं मुदे सर्वदा॥

इसके पश्चात् साधक २१ बार गुरु मंत्र का जप कर निम्न मंत्र का **'श्वेताभ माला'** से २१ माला मंत्र जप करें –

मंत्र

ॐ ह्रीं भोगेश्वर्यै मोक्षदायै भुवनेश्वर्यै फट्

Om Hreem Bhogeshwaryei Moksh-daayei Bhuvaneshwaryei Phat

साधना सम्पन्न होने के उपरान्त पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करें। साधना समाप्त होने के अगले दिन यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें तथा २१ दिन तक नित्य प्रातः ५१ बार उपरोक्त मंत्र का जप करें।

सामग्री पैकेट – १६२/-

आद्याशक्ति

भुवनेश्वरी साधना रहस्य

तांत्रिक ग्रन्थों में भगवती भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति कहा गया है, और जो भी व्यक्ति तन्त्र अथवा मन्त्र में सफल होना चाहता है, उसे भगवती भुवनेश्वरी की उपासना करनी ही पड़ती है, उसके बाद ही साधना क्रम आगे बढ़ सकता है।

महर्षि अगस्त्य से लगा कर विश्वामित्र, कणाद, शंकराचार्य और गुरु गोरखनाथ तक ने यह माना है कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही जीवन में पूर्ण सफलता हेतु भगवती भुवनेश्वरी साधना आवश्यक है।

शाक्त प्रमोद के अनुसार जीवन की सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण साधना भुवनेश्वरी साधना ही है, जीवन में अन्य साधनाएं कर सकें या न कर सकें, जीवन में अन्य महाविद्याओं को सिद्ध न कर सकें, पर साधक को अपने जीवन में भुवनेश्वरी साधना तो अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

उपरोक्त 'शाक्त प्रमोद' के प्रामाणिक श्लोक के अनुसार इस दिवस पर भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने पर निम्न लाभ निश्चय ही प्राप्त होते हैं—

- इस साधना को सम्पन्न करने पर गृहस्थ व्यक्ति भी उसी प्रकार योगी कहला सकता है, जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण पूर्ण गृहस्थ और सोलह हजार रानियों के पति होते हुए भी योगीराज कहलाये थे।

- इस साधना को सिद्ध करने पर निश्चय ही व्यक्ति में विशेष क्षमता आ जाती है और वह अपने शरीर को लघु रूप बना कर संसार में कहीं पर भी विचरण कर सकता है और वापिस अपने मूल आकार में आ सकता है, जिस प्रकार हनुमानजी ने लंका जाते समय अत्यन्त लघु रूप धारण कर लिया था और समुद्र पार करने के बाद अपने मूल रूप में आ गये थे, यह इस साधना की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है।

- इस साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति दीर्घायु सुखी और वाणी सिद्ध हो जाता है, वह दूसरों

को पूर्ण रूप से प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

- ऐसा व्यक्ति धनवान तो होता ही है, साथ ही साथ अनेक गुणों से विभूषित हो कर अपने व्यापार को कई गुना बढ़ा देता है।

- इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि दूसरे प्रकार में यह गुरु साधना ही है और इस साधना को सम्पन्न करने से स्वतः गुरु सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

- इस साधना को सम्पन्न करने पर संसार में जितने भी मन्त्र हों, उन मन्त्रों में सिद्धि मिल जाती है, और वह कुबेर के समान धनवान तथा सम्पत्तिवान बन जाता है।

- यदि कोई स्त्री दुर्भाग्यशाली हो और उसके पुत्र नहीं हो, या पुत्र आज्ञाकारी न हो तो घर का कोई सदस्य इस साधना को सम्पन्न करता है तो उसका दुःख समाप्त हो जाता है और वह पुत्रवती हो जाती है।

- इस साधना को सिद्ध करने से दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ भगवती भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती है और उसके साक्षात् दर्शन हो पाते हैं।

- शास्त्रों में कहा गया है, कि भगवती भुवनेश्वरी आद्य शक्ति है, अतः इसे सिद्ध करने पर महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी तीनों महादेवियां स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

वस्तुतः भुवनेश्वरी साधना जीवन की अनुपम और अद्वितीय साधना है और शास्त्रों में भुवनेश्वरी साधना के बारे में जितना लिखा गया है उतना और किसी साधना के बारे में नहीं कहा गया है, समस्त तांत्रिकों, योगियों और साधकों ने यह स्पष्ट रूप से बताया है, कि भुवनेश्वरी साधना ही जीवन की पूर्ण और प्रामाणिक साधना है।

भुवनेश्वरी साधना के दो प्रयोग मुख्य है, इनमें प्रथम प्रयोग तांत्रोक्त प्रयोग है और दूसरा मांत्रोक्त प्रयोग।

तांत्रोक्त प्रयोग रक्षात्मक प्रयोग है जिसके प्रभाव स्वरूप साधक को जीवन में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंच सकती, शत्रु उस पर कितना ही प्रहार करें, पीड़ा पहुंचाने का प्रयास करें, लेकिन भुवनेश्वरी साधक विजय ही प्राप्त करता है।

तांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना रहस्य

साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान संध्या आदि से निवृत्त होकर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाय इस साधना में सफेद ऊनी आसन या मृग चर्म का प्रयोग किया जाना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती धारण करे, साधिका यदि इस साधना को सम्पन्न करना चाहे तो सफेद साड़ी पहिने, प्रातःकाल अपसे सिर के बाल धो ले और बिना तेल लगाये बालों को खुला रखे।

इसके बाद साधक अपने सामने **'तांत्रोक्त सिद्ध भुवनेश्वरी यन्त्र'** को स्थापित करें जो कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रणीत प्राण संजीवनी मुद्रा से सिद्ध एवं प्राणप्रतिष्ठा युक्त हो। वास्तव में ही इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठित यन्त्र ही प्रयोग में लाया जा सकता है, यद्यपि इस प्रकार से प्राणप्रतिष्ठा करना अत्यन्त कठिन कार्य है और बहुत कम पण्डित ही इस प्रकार के यन्त्र को प्राण प्रतिष्ठित एवं मन्त्र सिद्ध कर पाते हैं, पर ऐसा यन्त्र कई-कई पीढ़ियों के लिए साधक के लिए लाभदायक बना रहता है।

अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछाएं और उस पर थाली रखें, थाली के चारों कोनों पर कुंकुम से पंच कोण बनावें और थाली के मध्य में त्रिकोण अंकित करें। इसके बाद थाली के मध्य में ही इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध यन्त्र स्थापित करें, और उसे **"ॐ भुवनेश्वर्यै नमः"** मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्ध जल से स्नान करावें, इनके बाद इसी नाम का उच्चारण करता हुआ, उसे दूध से, दही से, घृत से,

मधु में और शर्करा से स्नान करावें फिर इन पांचों चीजों को मिलाकर पंचामृत से स्नान करावें, स्नान कराते समय बराबर इसी मन्त्र का उच्चारण करता रहे। इसके बाद पुनः शुद्ध जल से यन्त्र को स्नान करा कर अलग किसी पात्र में रख दें, और उस पात्र का जल अलग कटोरे में ले कर एक तरफ रख दें, जिसे पूजा समाप्त होने के बाद जमीन में गाड़ दें।

इसके बाद उस थाली को मांज कर पोंछ कर सिन्दूर से मध्य में पंच कोण बनावें और थाली के अन्दर ही चारों कोनों पर सिन्दूर से ही त्रिकोण अंकित करे और मध्य में चावल की ढेरी बनाकर उस पर यन्त्र को स्थापित करे।

इसके बाद सामने अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक प्रज्वलित करें और यन्त्र पर जहां दस स्थानों पर सिन्दूर की दस बिन्दियां लगाई थी, वहां से थोड़ा-थोड़ा सिन्दूर लेकर अपने ललाट के मध्य में तिलक करे।

इसके बाद थाली में जो चारों कोनों पर त्रिकोण बनाये हैं, उनमें से प्रत्येक त्रिकोण पर छोटी-छोटी चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक पर एक-एक **'लघु नारियल'** स्थापित करे, और लघु नारियल पर सिन्दूर का तिलक करे। यन्त्र के सामने **'दस हकीक नग'** पत्थर रख दे, जो कि मन्त्र सिद्ध हो, और प्रत्येक हकीक नग पर सिन्दूर का तिलक करे, यह दस महा शक्तियों के प्रतीक चिन्ह है। इसके बाद यन्त्र के बाईं ओर चावल की ढेरी बना कर **'मोती शंख'** स्थापित करें और दाहिनी ओर चावल की ढेरी बनाकर **'सिद्धि फल'** स्थापित करें। फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, सिन्दूर का तिलक करें और पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद यन्त्र के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें तथा एक पात्र में पंचामृत बना कर रखें (पंचामृत-दूध, दही, घी, शहद और शक्कर को मिलाकर बनाया जाता है) इसके पास ही पानी से भरा हुआ लोटा रख दें और फिर प्रयोग प्रारम्भ करें।

भुवनेश्वरी तांत्रोक्त सपर्या प्रयोग

साधक सबसे पहले अपनी चोटी के गांठ लगावें, अपने अंगूठे से अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करें और फिर सिन्दूर का तिलक अपने सिर के मध्य भाग में हृदय तथा नाभि पर भी करें। इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

विनियोग

ॐ अस्य भुवनेश्वरी पंजर मन्त्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीज। ईं शक्तिः। रं कीलकं। सकलमनोवांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः॥

ऐसा कह कर हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें, और इसके बाद न्यास करें—

ऋष्यादिन्यास

श्री शक्ति-ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री-छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि।
हं बीजाय नमः गुह्ये।
ईं शक्तये नमः नाभौ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

न्यास का तात्पर्य है कि उसमें शरीर के जिन-जिन अंगों का वर्णन आया है, साधक मन्त्र का उच्चारण करते हुए शरीर के उस-उस अंग को दाहिने हाथ से स्पर्श करे, जिससे कि भगवती भुवनेश्वरी पूर्ण रूप से शरीर के सभी अंगों में समाहित हो सके।

इसके बाद साधक षडंग न्यास करे।

षडंग न्यास	अंग न्यास	कर न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
,,	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
,,	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
,,	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
,,	कनिष्ठिकाभ्यां वषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
,,	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार के न्यास करने के बाद दोनों हाथ जोड़कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करे।

ध्यान

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृत-जनि-जननी योगिनीं योगयोनिम् ।
देवानां जीवनायोज्ज्वलित-जय-परं ज्योतिरूपांगधात्रीम् ।।
शंख चक्रं च बाणं च धनुरपि दधतीं दोश्चतुष्काम्बुजातैः ।
मायामांद्यां विशिष्टां भव-भव-भुवनां भू-भवा भार-भूमिम् ।।

ध्यान करने के बाद साधक **'स्फटिक माला'** से वहीं पर बैठे-बैठे निम्न दुर्लभ गोपनीय मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करें।

भगवती भुवनेश्वरी तांत्रोक्त पिंजर महामन्त्र

।। ॐ क्रों श्रीं ह्रीं ऐं सौं ह्रीं नमः ।।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब साधक दस बत्तियां लगा कर भगवती भुवनेश्वरी की आरती सम्पन्न करे, या जगदम्बा अथवा दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उसे करे, इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी के सामने जो प्रसाद चढ़ाया हुआ है, वह थोड़ा सा स्वयं भक्षण करे और अपने परिवार वालों को बांटे।

इसके बाद पूर्ण सिद्धि के लिए किसी पात्र में समिधाएं (लकड़ियां) जला कर इसी मन्त्र की पूरी एक सौ आहुतियां दे दें तब यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है।

भुवनेश्वरी यन्त्र के आस-पास जो लघु नारियल आदि सामग्री है, उसे एक सफेद रेशमी वस्त्र में बांध कर घर के भण्डार गृह में या जहां धनराशि आदि रखी जाती है, अथवा तिजोरी में सम्मानपूर्वक स्थापित कर दें और यन्त्र को पूजा स्थान में सफेद रेशमी वस्त्र बिछा कर स्थापित करे।

इसके बाद यदि श्रद्धा हो तो एक ब्राह्मण को या एक कुंवारी कन्या को भोजन करा दें अथवा मन्दिर में दान दक्षिणा आदि भिजवा दें।

भुवनेश्वरी मांत्रोक्त साधना रहस्य

वाणी सिद्धि कुबेर साधना एवं दुर्भाग्य नाश के लिए मांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जानी आवश्यक है।

मैं आगे के पृष्ठों में गोपनीय और दुर्लभ भुवनेश्वरी साधना रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं, इसका मन्त्र अपने आप में अत्यन्त सरल है और कोई भी कम पढ़ा-लिखा साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साधक प्रातःकाल उठ कर स्नानादि से निवृत्त हो श्वेत वस्त्र धारण कर स्वयं या अपनी पत्नी के साथ पूजा स्थान में बैठ जांय और अपने सामने **"त्रैलोक्य मोहन भुवनेश्वरी यन्त्र"** को स्थापित कर दें, यह अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय यन्त्र है जिसकी साधकों ने अत्यधिक प्रशंसा की है, इस यन्त्र का निर्माण जटिल है, परन्तु पत्रिका कार्यालय ने इस अवसर पर बहुत ही कम यन्त्रों का निर्माण कराया है, जिससे कि साधक ऐसा दुर्लभ यन्त्र अपने घर में स्थापित कर सकें शास्त्र में तो यन्त्र निर्माण के बारे में कहा गया है कि यह यन्त्र जटिल है, कठिन है और सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ही ऐसा यन्त्र स्थापित हो सकता है, इसके बारे में बताया है—

पद्ममष्टदलम्बाह्ये वृत्तं षोडशभिर्दले:
विलिखेत्वर्कर्णिकामध्ये षट्कोणमतिसुन्दरम्
चतुरस्त्रश्चतुद्द्वारमेवम्मण्डलमालिखेत्

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ कर आप अनुमान लगा सकेंगे, कि इस यन्त्र का निर्माण कितना अधिक जटिल और कठिन है, इसके साथ ही साथ भगवती भुवनेश्वरी का प्रामाणिक चित्र भी अपने पूजा स्थान में इस दिन स्थापित कर देना चाहिए।

इसके बाद यन्त्र को शुद्ध जल से धो कर पोंछें और किसी दूसरे पात्र में केसर से "ह्रीं" अक्षर लिख कर उस पर यन्त्र को स्थापित करें, यन्त्र को उस पात्र में रख कर उसके चारों कोनों पर "ह्रीं" अंकित करें और फिर साधक उसकी प्राणप्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः मम शरीरे अमुक देवतायाः प्रणाः इह प्राणाः, जीव इह स्थितः, सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, वाक्-मनश्चक्षुः श्रोत्र-जिह्वा प्राण पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

ऐसा करने के बाद तांत्रोक्त रूप से भुवनेश्वरी सिद्ध करने के लिए अपने आसन का शोधन करें, आसन के नीचे जो भूमि है, उस भूमि को दाहिने हाथ से छूकर यह मन्त्र पढ़ें—

ॐ पवित्र-वज्र-भूमे ! हुं फट् स्वाहा ।

इसके बाद भूमि को मन्त्र सिद्ध करने के बाद भूमि पर जल अक्षत चढ़ा कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका पूजन करें—

ॐ आधार-शक्त्यै नमः जलाक्षत-चन्दनं समर्पयामि।

आधार शक्ति अर्थात् भूमि की पूजा करने के बाद आसन का शोधन करें, इसके लिए पहले दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ जल भूमि पर छोड़ दें—

ॐ अस्य आसन शोधन मन्त्रस्य श्री मेरु-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मोदेवता आसनोपवेशने विनियोगः ।।

विनियोग करने के बाद आसन के ऊपर दाहिना हाथ रख कर नीचे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करें—

ॐ पृथ्वी ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु आसनम् ।।

इसके बाद अपनी दाहिनी ओर चावलों की ढेरी बना कर उस पर एक सुपारी रखें और कुंकुम का तिलक करें, उसे भैरव मान कर उसके सामने गुड़ का भोग लगावें, और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि वे निरन्तर साधक की रक्षा करते हुए सभी विघ्नों का नाश करें—

ह्रीं तीक्ष्ण-दष्ट्र ! महाकाय ! कल्पान्त दहनोपम ! भैरव नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

ऐसा करने के बाद साधक अपना रक्षा विधान निम्न प्रकार से करें—

तीन बार दोनों हाथों की हथेली से आवाज करते हुए "फट्" शब्द करें और बाएं पैर की एड़ी से तीन बार प्रहार करें इससे भूमि पर होने वाले विघ्नों का निवारण होता है।

भुवनेश्वरी मन्त्र प्रयोग

अपने सामने जो दुर्लभ भुवनेश्वरी यन्त्र रखा है और जो सामने भुवनेश्वरी चित्र स्थापित किया है, उसके सामने साधक निम्न प्रकार से विनियोग, न्यास एवं ध्यान करें—

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री शक्तिलः ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्री भुवनेश्वरी देवता । हं बीजं । ईं शक्तिः । रं कीलकं सकल-मनोवांछित-सिद्धयर्थ पाठे विनियोगः ।।

ऋष्यादिन्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि ।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे ।
श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि ।
हं बोजाय नमः गुह्ये ।
ईं शक्तये नमः नाभौ ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल-मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

षडंग न्यास अंग न्यास कर न्यास

	अंग न्यास	कर न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
,,	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
,,	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
,,	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
,,	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
,,	करतल करपृष्ठाभ्यां फट	अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास के बाद साधक दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें—

सरोजनयनां चलत् कनक कुण्डलां शैशवी,
धनुर्जप वटी करामुदित सूर्य कोटि प्रभाम् ।
शशांक कृत शेखरां शव शरीर सस्था शिवाम्,
प्रातः स्मरामि भुवनेश्वरीं शत्रु गति स्तम्भनीम् ।।

ध्यान करने के बाद साधक 'स्फटिक माला' से मन्त्र जप प्रारम्भ करे, पर मन्त्र जप से पूर्व भुवनेश्वरी महायन्त्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती जला ले ।

इसके बाद शान्त मनोयोग पूर्वक भुवनेश्वरी बीज मन्त्र का जप करें, यह मन्त्र एक अक्षर का है और शास्त्रों के विधान के अनुसार यदि भुवनेश्वरी साधना दिवस के दिन इस मन्त्र की १०८ माला मन्त्र जप हो जाता है, तो निश्चय ही भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती ।

पढ़ने में १०८ माला बड़ी लगती है, एक वर्ण का मन्त्र होने के कारण इस पूरे मन्त्र जप एवं साधना मे चार या पांच घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता ।

भुवनेश्वरी मूल मन्त्र

"ह्रीं"

उपरोक्त मन्त्र अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मन्त्र है, इस मन्त्र को चैतन्य करने के लिए इस मन्त्र से पहले पांच बार गुरु मन्त्र उच्चारण और बाद में भी गुरु मन्त्र उच्चारण कर लें, यह सिर्फ एक बार किया जाता है, उसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ कर दें ।

जब मन्त्र जप सम्पन्न हो रहा हो, और बीच में ही भगवती भुवनेश्वरी विग्रह के साक्षात् दर्शन सुलभ हो जाय, तब दोनों हाथ जोड़ कर भक्ति भाव से भगवती भुवनेश्वरी के दर्शन कर लें और प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करें, कि वह सिद्ध हो और साधक के जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण करे । ●

देव्युवाच

भुवनेश्वर्याश्च देवेश या या विद्याः प्रकाशिताः।
श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम्॥
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं यत्पुरोदितम्।
कथयस्व महादेव मम प्रीतिकरं परम्॥

ईश्वर उवाच

श्रृणु पार्वति वक्ष्यामि सावधानाऽवंधारय।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम्॥
सिद्धविद्यामयं देवि सर्वैश्वर्यप्रदायकम्।
पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत्॥
त्रैलोक्यमङ्गलस्यास्य कवचस्य ऋषिश्शिवः।
छन्दो विराट् जगद्धात्री देवता भुवनेश्वरी॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
ह्रीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम्॥
ऐं पातु दक्षनेत्रं मे ह्रीं पातु वामलोचनम्।
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी॥
वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा।
ह्रीं पातु वदनं देवी ऐं पातु रसनां मम॥
वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु पराम्बिका।
श्रीं स्कन्धौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा॥
क्लीं करौ त्रिपुरेशानी त्रिपुरैश्वर्यदायिनी।
ॐ पातु हृदयं ह्रीं में मध्यदेश सदावऽतु॥
क्रौं पातु नाभिदेशं सा त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी।
सर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्ववशङ्करी॥
ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम्।
माहेश्वरी सदा पातु सक्थिनी जानुयुग्मकम्॥

अन्नपूर्णा सदा पातु स्वाहा पातु पदद्वयम्।
सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णात्मिका पुरा॥
तार माया रमा कामः
षोडशार्णा ततः परम्।
शिरस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा॥
तारं दुर्गे-युगं रक्षिणी स्वाहेति दशाक्षरी।
जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां सर्वतो मुदा॥
मायाबीजादिका चैषा दशार्णा च परा तथा।
उत्तप्तकाञ्चनाभासा जयदुर्गाऽननेऽवतु॥
तारं ह्रीं दुं च दुर्गायै नमोऽष्टार्णात्मिका परा।
शङ्खचक्रधनुर्बाणधरा मां दक्षिणेऽवतु॥
महिषमर्दिनी स्वाहा वसुवर्णात्मिका परा।
नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी॥
माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता।
पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु॥
पाशांकुशपुटा माये हि परमेश्वरि स्वधा।
त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारूढाऽनलेऽवतु॥
सरस्वती पञ्चशरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे।
स्वाहारव्यक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु॥
तारं माया तु कवचं खे रक्षेत् सततं वधूः।
हूं क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाखिलप्रदा॥
त्वरिताष्टाहिभिः पायात् शिवकोणे सदाचमाम्।
ऐं क्लीं सौः सततं वाला मूर्ध्वदेशेततोऽवतु॥

विंद्रुन्ता भैरवी बाला भूमौ च मां सदाऽवतु।
इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यमङ्गलं परम्॥
सारं सारतरं पुण्यं महाविद्यौघविग्रहम्।
अस्यापि पठनात् सद्यः कुबेरोपि धनेश्वरः॥
इन्द्राद्याः सकला देवाः पठनाद्धारणाद्यतः।
सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः॥
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत्सकृत्।
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्॥
प्रीतिमन्योन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे।
वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः॥

यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम्।
कवचं परम पुण्यं सोपि पुण्यवतां वरः॥
सर्वैश्वर्ययुतौ भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत्।
पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा॥
बहुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्यापि लभते सूतम्।
ब्रह्मास्त्रदीनि शस्त्राणि नैव कृन्तति तं जनम्॥
एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भुवनेश्वरीम्।
दारिद्रयं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्॥

॥इति रुद्रयामले त्रैलोक्यमङ्गलं नाम श्री भुवनेश्वरी कवचं॥

इदं श्री भुवनेश्वर्याः पञ्जरं भुवि दुर्लभम्।
येन संरक्षितो मर्त्यो वाणैः शस्त्रैर्न बाध्यते॥
ज्वर-मारी-पशु-व्याघ्र-कृत्या-चौराद्युपद्रवैः।
नद्यम्बु धरणी विद्युत्कृशानु भुजगारिभिः॥
सौभाग्यरोग्य सम्पत्ति कीर्तिकान्ति यशोर्थदम्।
ओं क्रों श्रीं ह्रीं ऐं सौः पूर्वेऽधिष्ठाय मां पाहि चक्रिणि भुवनेश्वरि॥
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते।
कृष्णवर्णे महम्भूते वृहत्कर्णे भयङ्करि॥
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय।
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं॥
यदि शक्यमशक्यं तन्मे भगवति शमय स्वाहा।
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्॥
ममाग्नेयां स्थिता पाहि गर्दिनी भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥

उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
नैर्ऋत्ये मां स्थितां पाहि खड्गिनी भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
पश्चिमे मां स्थिता पाहि पाशिनी भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥

उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
वायव्ये मां स्थिता पाहि शक्तिनी भुवनेश्वरी
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
सौम्येऽधिष्ठाय मां पाहि चापिनी भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
ईशेऽधिष्ठाय मां पाहि शूलिनी भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।

देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
ऊर्ध्वेऽधिष्ठाय मां पाहि पद्मिनी भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
अधस्तान्मां स्थिता पाहि वाणिनी भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
अग्रतो मां स्थिता पाहि प्रासिनी भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥

कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
पृष्ठतो मां स्थिता पाहि वरदे भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
पश्चिमो मां सदा पाहि सांकुशे भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥

सर्वतो मां सदा पाहि सायुधे भुवनेश्वरी।
योगविद्ये महामाये योगिनी गण सेविते॥
कृष्णवर्णे महद्भूते लम्बकर्णे भयङ्करि।
देवि देवि महादेवि मम शत्रून् विनाशय॥
उत्तिष्ठ पुरुषे किं स्वपिषि भयं मे समपस्थितं।
यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय स्वाहा॥
त्रैलोक्यमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै
धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।
याम्येऽधिष्ठाय मां पाहि शङ्खिनी भुवनेश्वरी॥
प्रोक्ता दिङ्मनवो देवि चतुर्दश शुभप्रदाः।
एतत् पञ्जरमाख्यातं सर्वरक्षाकरं नृणाम्॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
न भक्ताय प्रदातव्यं नाशिष्याय कदाचन॥
सिद्धिकामो महादेवि गोपयेन्मातृजारवत्।
भयकाले होमकाले पूजाकाले विशेषतः॥
दीपस्यारम्भकाले वै यः कुर्यात्पञ्जरं सुधीः।
सर्वान् कामानवाप्नोति प्रत्यूहैर्नाभिभूयते॥
रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत्।
कृत्या-रोग-पिशाचाद्यैर्न कदाचित् प्रवाध्यते॥
प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्यायामर्द्धरात्रके।
यः कुर्यात्पञ्जरं मर्त्यो देवीं ध्यात्वा समाहितः॥
कालमृत्युमपि प्राप्तं जयेदत्र न संशयः।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रं न लगन्ति च॥
पुत्रवान् धनवाँल्लोके यशस्वी जायते नरः॥

॥इति श्री रुद्रयामले भुवनेश्वरी पंजर स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

विनियोग

ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वर्यास्त्र खड्गमाला महामंत्रस्य दिगम्बरो भगवान शरभः ऋषिः, गायत्र्यादि सप्तछन्दासि, आद्या भगवती राजराजेश्वरी देवता, ह्कृल्यौं बीजं, माया शक्तिः, ह्रीं कीलकम् महान्ताद्या भुवनेश्वर्यै हृदयं, मम् समस्त पाप क्षयार्थं राज्यप्राप्तार्थ पदप्राप्तार्थ यश प्राप्तार्थ लक्ष्मीप्राप्तार्थ ऐश्वर्यप्राप्तार्थ सर्वप्राप्तार्थ मोक्षादि चतुर्वर्ग साधनार्थं च श्री महामाया प्रीतये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

दिगम्बराय भगवान शरभः ऋषये नमः शिरसि।
गायत्र्यादि सप्त छन्देभ्यो नमः मुखे।
आद्या भगवती महान्ता राजराजेश्वरी देवतायै नमः हृदि।
ह्कृल्यौ बीजाय नमः नाभौ।
श्रीं शक्तये नमः गुह्ये।
ह्रीं कीलकाय नमः पादयोः।
महान्ता भुवनेश्वर्यै नमः सर्वांगे।
ह्री श्रीं श्रीं इति बीज त्रयेण दिग्बन्धः।

करन्यास

ॐ नमो अलक्ष्य प्रताप विजय भगवति अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ह्रीं नमो भगवति सहस्त्र वदने तर्जनीभ्यां स्वाहा॥
श्रीं नमो भगवति परमेश्वरि रक्त चामुण्डे मध्यमाभ्यां वषट्।
ह्रीं चण्ड तीव्र ज्वाला दंष्ट्रा कराल वदने अनामिकाभ्यां हुं॥
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं कालाग्नि रुद्र स्वरूपे कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
ॐ ह्कृल्यौ नमो भगवति भुवनेश्वर्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्॥

ध्यान

प्रातः स्मरामि भुवना सुविशालभालं,
माणिक्य मौलि-लसितं ससुधांशु-खण्डम्।
मन्दस्मितं सुमधुरं करुणाकटाक्षं,
ताम्बूलपूरितमुखं श्रुति-कुण्डले च॥
प्रात स्मरामि भुवना-गलशोभि मालां,
वक्षःश्रियं ललिततुङ्ग पयोधरालीं
संवित् घटञ्च दधतीं कमलं कराभ्यां
कञ्जासनां भगवतीं भुवनेश्वरीं ताम्॥
प्रातः स्मरामि भुवना-पदपारिजातं,
रत्नौघनिर्मित-घटे घटितास्पदञ्च
योगञ्च भोगममितं निजसेवकेभ्यो
वाञ्छाऽधिकं किलददानमनन्तपारम्॥
प्रातः स्तुवे भुवनपालनकेलिलोलां
ब्रह्मेन्द्रदेवगण-वन्दित-पादपीठाम्
बालार्कबिम्बसम-शोणित-शोभिताङ्गीं
विन्द्वात्मिकां कलितकामकलाविलासाम्॥

प्रातर्भजामि भुवने तव नाम रूपं
भक्तार्तिनाशनपरं परमामृतञ्च।
ह्रींङ्कारमन्त्र-मननी जननी भवानी
भद्रा विभा भयहरी भुवनेश्वरीति॥
यः श्लोकपञ्चकमिदं स्मरति प्रभाते
भूतिप्रदं भयहरं भुवनाम्बिकायाः
तस्मै ददाति भुवना सुतरां प्रसन्ना
सिद्धं मनोः स्वपदपद्म-समाश्रयञ्च॥

श्रीभुवनेश्वर्यास्त्र

जय देवि जगद्धात्रि जय पापौघहारिणि।
जय दुःखप्रशमनि शान्तिर्भव ममार्चने॥
श्री भुवनेश्वर्यै परमेशानि जय कल्पान्तकारिणि।
जय सर्वविपत्तिघ्ने शान्तिर्भव ममार्चने॥
जय बिन्दुनादरूपे जय कल्याणकारिणि।
जय घोरे च शत्रुघ्ने शान्तिर्भव ममार्चने॥

ॐ नमो भगवति भुवनेश्वर्यै मम सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय कामान स्फुर स्फुर प्रस्फुर तर तर अनुपमा घोराति घोर सर्व चट चट प्रचट प्रचट सूर्य सोमाग्नि नेत्रायै सहस्त्राष्ट मजायै अघोर भीम भयंकरायै नर कराम्बर धरायै युग युगान्ताग्नि ज्वालादित्य प्रचण्डायै त्र्यम्बकायै काल रुद्र स्वरूपिण्यै हुं हुं शत्रु वाक् स्तम्भिन्यै आत्म विरोधिणां शिरोललाट मुख नेत्र कर्ण नासिकोरु पाद रेणु दन्तोष्ठ जिह्वा तालु गुह्यं गुदकटि सर्वांगेषु केशादि पाद पर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय श्रीं ह्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै स्वाहा॥

ॐ ह्रीं ऐं क्लीं सौः भुवनेश्वर्यै स्वाहा।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्यै पर मंत्र यंत्र तंत्राणि छेदय छेदय, आत्म मंत्र यंत्र तंत्राणि रक्ष रक्ष, ग्रहं निवारय निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय, दुःखं हर हर, दारिद्र्यं निवारय निवारय, सर्व मंत्र स्वरूपिणि सर्व यंत्र स्वरूपिणि वेदाद्यखिल शास्त्र स्वरूपिणि षट् दर्शनादि बोध स्वरूपिणि चैतन्यानन्द स्वरूपिणि सर्वास्त्र प्रयोग स्वरूपेण मम सर्व दुष्ट ग्रह भूत ग्रह आकाशग्रह पाताल ग्रह सर्व चाण्डाल ग्रह, यक्ष ग्रह किन्नर ग्रह किम्पुरुष ग्रह ब्रह्म राक्षस वेतालादि ग्रहान् छिन्दि छिन्धि, ऐं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं चां चां चां मुं मुं मुं डां डां डां यैं यैं यैं नं नं नं मं मं मं खें खें खें फट् फट् शीघ्रं घन घन आवेशय आवेशय भस्मीं कुरु भस्मीं कुरु भुवनेश्वर्यै मदीय सर्वान शत्रून् समर्पयामि, वद वद मम सर्व दुष्टान मर्दय मर्दय मारय मारय शोषय शोषय चण्डय्र चण्डय प्रचण्डय प्रचण्डय अम्बिकायै रं रं रं क्षं क्षं क्षं चं चं चं डं डं डं क्लां क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं क्लः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हूं फट् स्वाहा॥

ॐ ऐं श्रीं क्लीं सौः ह्सौः भुवनेश्वर्यै स्वाहा।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्यै गारुड़ वारुण सार्प पर्वत वह्नि दैवत गणेश विनायकादि अघोर नारायण विष्णु ब्रह्म रुद्र वज्रास्त्राणि भंजय भंजय निवारय निवारय तेषां मंत्र यंत्र तंत्राणि विध्वंसय विध्वंसय।

ॐ श्रीं क्लीं सौः ऐं ॐ ॐ श्रीं श्रीं भुवनेश्वर्यै ऐं क्लीं सौः स्वाहा।

ॐ ह्रीं नमो भगवती भुवनेश्वर्यै अनन्त घोर ज्वर मरण भयं क्षय कुष्ठ व्याधिं विनाशय विनाशय एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक सांसर्गिक वर्तमानार्ध मासिक पञ्च मासिक षाण्मासिक सांवत्सरिक ज्वरानुभूत कृत पिशाच कृत शाकिनी डाकिनी कृत ग्रह वेताल कृत दिवा चारि रात्रि चारि सन्ध्या चारि महाभूत कृत पीड़ा ज्वरान्नाशय नाशय नाशय त्रोटय

त्रोटय स्फोटय स्फोटय वारय वारय मारय मारय सर्व शूलान् दारय दारय उदर शूलान मूर्ध्नि शूलान् गुल्म शूलान् गुल्मान् अति विषान् अपस्मारान् मूत्र कृच्छ्रान् भगन्दरान् शूलान् उद्वाहान् कुष्ठान् वान्तिकान् शमय शमय त्रोटय त्रोटय बंध बंध विद्वेषय विद्वेषय भंजय भंजय व्याघ्र पादान्त सन्निपात वातादि शारीरिक कफ पित्त कास श्वास श्लेष्मादिकं दह दह छिन्धि छिन्धि श्री महादेव निर्मित मोहन वश्याकर्षणोच्चाटन कीलन विद्वेषण मारणादि षट् कर्माणि वृत्यं हुं हुं फट् स्वाहा॥

ॐ श्रीं क्लीं सौः ह्रीं भुवनेश्वर्यै ॐ हूं ठः ठः ठः स्वाहा।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्यै मम शरीरे वात ज्वर मरण भयं छिन्धि छिन्धि हन हन भूत ज्वर प्रेत ज्वर पिशाच ज्वर रात्रि ज्वर अमित ज्वर सन्निपात ज्वर बाल ज्वर कुमार ज्वर ग्रह ज्वर ताप ज्वर ब्रह्म ज्वर विष्णु ज्वर रुद्र ज्वर गणेश ज्वर मारी प्रवेश ज्वर कामादि विषम ज्वर मारी।

ॐ ह्रीं ऐं सौः क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्यै स्वाहा। ॐ ह्रीं नमो भगवती भुवनेश्वर्यै मम जन्मांगे स्थित देव ग्रह योनि ग्रह योगिनी ग्रह दैत्य ग्रह दानव ग्रह राक्षस ग्रह ब्रह्म राक्षस ग्रह सिद्ध ग्रह यक्ष ग्रह विद्याधर ग्रह किन्नर ग्रह गन्धर्व ग्रह अप्सरा ग्रह भूत ग्रह पिशाच ग्रह कूष्माण्ड ग्रह गजादि ग्रह पूतना ग्रह बाल ग्रह सूर्यादि नव ग्रह मुद्गल ग्रहपितृ ग्रह वेताल ग्रह शत्रु ग्रह राज ग्रह चौरवैरि ग्रह नेतृ ग्रह देवता ग्रह आधि ग्रह व्याधि ग्रह अपस्मरादि ग्रह ग्रह ग्रह पुर ग्रह उरग ग्रह सरज ग्रह उक्त ग्रह डामर ग्रह उदक ग्रह अग्नि ग्रह आकाश ग्रह भू ग्रह वायु ग्रह शालि ग्रह

धान्यादि ग्रह विषय ग्रह ग्रहानाति ग्रह घोर ग्रह छाया ग्रह सर्प ग्रह विष जीव ग्रह वृश्चिक ग्रह काल ग्रह शाल्य ग्रहादि सर्वान ग्रहान नाशय नाशय कालाग्नि रुद्र स्वरूपेण दह दह अनुनय अनुनय शोषय शोषय मुखय मुखय कम्पय कम्पय भक्षय भक्षय निमीलय निमीलय मर्दय मर्दय विद्रावय विद्रावय निधन निधन स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय उष्टम्भय उष्टम्भय मारय मारय चण्ड चण्ड प्रचण्ड प्रचण्ड क्रोध क्रोध ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ज्वाला दित्य वदने उग्र ग्रस उग्र ग्रस विजृम्भय विजृम्भय घोषय घोषय मारय मारय हन हन।

ॐ सौं क्लीं श्रीं ऐं ह्रीं हूं भुवनेश्वर्यै स्वाहा।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्यै परराष्ट्र गजाश्वं रथ सैन्य शस्त्रास्त्र बलं स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय खादय खादय विदारय विदारय भीषय भीषय कम्पय कम्पय भक्षय भक्षय त्वरित त्वरित बन्धय बन्धय प्रमुख प्रमुख स्फुट स्फुट ठं ठं ठं ठं क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः हुं फट् स्वाहा॥

ॐ क्लीं ऐं सौं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं भुवनेश्वर्यै क्रीं ठः ठः ठः फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं नमो भगवति भुवनेश्वर्यै सर्वादिशो बध्नामि, महेश्वरं बध्यनामि पितामहं बध्नामि, महाविष्णुं बध्नामि, गणेशं बध्नामि, विनायकान बध्नामि, कार्तिकं बध्नामि,

दशदिक्पालान बध्नामि, सर्वान सुरान बध्नामि, ब्रह्माधस्त्रान् बध्नामि, अघोरं बध्नामि, सर्वान् सुरान् बध्नामि, सर्वान् द्विजान् बध्नामि, केशरी बध्नामि, सत्वान बध्नामि, व्याघ्रान बध्नामि, गजान बध्नामि, चौरान बध्नामि, शत्रून बध्नामि, महामारीं बध्नामि,

सर्वा यक्षिणीं बध्नामि, आब्रह्म स्तम्भ पर्यंतं सर्वान चराचर जीवान् बध्नामि, माया ज्वालिनि स्तम्भय स्तम्भय सर्व वादीन् मूकय मूकय, कीलय कीलय, गतिं स्तम्भय स्तम्भय, चौरादि सर्वान दुष्ट पुरुषान् बन्धय बन्धय, दिशा विदिशा रात्र्याकर्षण पाताल घ्राण भ्रूचक्षु: शिर: श्रोत्रे हस्तौ पादौ गतिं मतिं मुखं जिह्वां वाचां शब्द पञ्चाशत् कोटि योजन विस्तीर्णान् भू-ब्रह्माण्ड देवान् बध्नामि, मण्डलं बध्नामि, व्याधान् क्रमय क्रमय रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा॥

ॐ ह्रीं क्लीं हूं क्रीं ह्रीं श्रीं ऐं सौः क्लीं भुवनेश्वर्यै सर्वदोषहारिणि हुं फट् स्वाहा॥

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं हूं ह्सौः भुवनेश्वर्यै सर्व विघ्नछेदिनि हुं फट् स्वाहा॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं हूं क्रीं क्रीं ऐं सौः भुवनेश्वर्यै सर्वदुष्टभक्षिणि क्रीं हुं फट् स्वाहा॥

ॐ ऐं सौः श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै सर्वपाप निकृन्तिनि हुं फट् स्वाहा॥

ॐ ऐं सौः क्लीं ह्रीं श्रीं ह्सौः हूं हूं भुवनेश्वर्यै सर्वयंत्र स्फोटिनि ॐ ऐं फट् स्वाहा॥

ॐ सौः क्लीं ऐं क्लीं सौः स्त्रीं हूं श्रीं ह्रीं क्रीं भुवनेश्वर्यै सर्वश्रृंखलात्रोटिनि ॐ हुं फट् स्वाहा॥

ह्रीं भुवनेश्वर्यै सर्वशांतिं कुरु कुरु।

ॐ श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै स्वस्तिं कुरु कुरु।

ॐ श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै पुष्टिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वर्यै श्रियं देहि देहि।

ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै यशो देहि देहि।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः भुवनेश्वर्यै आयुर्देहि देहि।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ह्रीं भुवनेश्वर्यै आरोग्यं देहि देहि।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै पुत्र पौत्रान् देहि देहि।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः ऐं सौः भुवनेश्वर्यै सर्व कामांश्च देहि देहि।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै भक्तिं देहि देहि।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः क्लीं ऐं सौः श्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै स्वतंत्र स्वमंत्र स्वयंत्र प्रकाशय प्रकाशय।

ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं सौः सौः भुवनेश्वर्यै सर्वसिद्धिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रां क्रीं ह्रीं श्रीं ऐं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं सौः क्लीं भुवनेश्वर्यै मम शरीरे अमृतंवर्षा कुरु कुरु।

ॐ ॐ क्लीं क्लीं सौः सौः श्रीं श्रीं ऐं ऐं सौः सौः ह्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै राज्यं देहि देहि।

ॐ श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं क्लीं सौः क्लीं सौः क्रीं क्रीं ह्रीं भुवनेश्वर्यै सपरिवारं मां रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः ह्सौः ॐ ह्सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं, नमस्ते नमस्ते ह्कृल्यौं ॐ॥